सितम्बर 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

39.59 Lakh

National Readership Studies Council's latest survey- Out of 301 magazines in India Telugu occupies the third position And that position is for SWATI WEEKLY.

SWATI SAPARIVARA PATRIKA has endeared herself to the hearts of 39.59 lakh readers and in every village and town of Andhra Pradesh.

It is Scintillating Victory.
Unparalleled Glory. Inevitable Crowning.

Telugus are in every country in the world.
Telugus are in every state of India.
Swati is the identity of Telugus.
Swati is the darling of every Telugu.

It's an honour bestowed for 20 years of hardwork Infectious enthusiasm and dedicated efforts.

For making this great victory possible
We Salute Telugu Language
We Salute Telugus
We Salute all Telugu Readers.

THE LARGEST CIRCULATED TELUGU WEEKLY

चन्दामामा
(नवम्बर २००५ अंक)

बच्चों का विशेष

बाल लेखकों तथा कलाकारों (६ वर्ष से १५ वर्ष की आयु तक) को अपनी मौलिक कहानियाँ तथा चित्रकलाएँ भेजने के लिए आमंत्रित करता है।

कहानियाँ

● अधिकतम तीन प्रविष्टियाँ ● प्रविष्टि किसी भी भाषा में हो सकती है जिसमें चन्दामामा प्रकाशित होता है ● शब्दों की संख्या ५०० से अधिक नहीं ● आकर्षक शीर्षक दो ● श्रेष्ठ विष्टियाँ सभी भाषा-संस्करणों में प्रकशित होंगी।
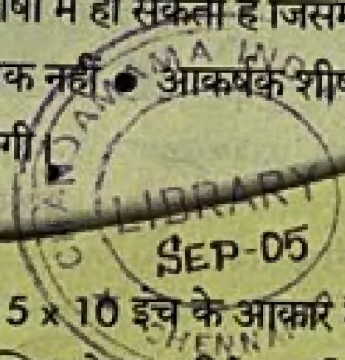
चित्रकलाएँ

● अधिकतम तीन प्रविष्टियाँ ● कम से कम 15 x 10 इंच के आकार में ● चित्रकला का विषय भारतीय पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित होना चाहिये - प्रविष्टि के साथ संक्षिप्त सारांश संलग्न होना चाहिये। ● प्रविष्टि के आधार पर चुने जाने पर भाग लेने वालों को कहानियों के चित्रांकन हेतु चेन्नई की यात्रा करने के लिए तैयार रहना चाहिये। ● यात्रा-व्यय दिया जायेगा।

सामान्य

● पासपोर्ट आकार का अपना रंगीन चित्र भेजो ● एक अलग पृष्ठ पर नाम, उम्र (जन्म दिन), कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता पिन कोड़ के साथ, फ़ोन नं., प्रविष्टि का विवरण दो ● प्रविष्टि के विषय में बिना किसी की सहायता के प्रतियोगी की मौलिक कृति होने का अभिभावक द्वारा प्रमाण पत्र संलग्न होना चाहिये। ● लिफाफे पर लिखा होना चाहिये : बच्चों का विशेष

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड
८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी,
इक्काटुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

अन्तिम तिथि : १५ सितम्बर २००५

चन्दामामा सम्पुट - ५६ सितम्बर २००५ सञ्चिका - ९

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

आदर्श अध्यापक

हमारे शास्त्र कहते हैं: अपने माता-पिता के बाद, अध्यापक ही देव-तुल्य पूजनीय होता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक सर्वोत्कृष्ट अध्यापक थे। वे इतने प्रकाण्ड विद्वान थे कि विदेशी विश्वविद्यालय अपने छात्रों को सम्बोधित करने के लिए इन्हें आमंत्रित किया करते थे। राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद की शोभा बढ़ानेवाले वे प्रथम शिक्षाविद थे। उनके दिवंगत हो जाने के पश्चात उनके जन्मदिन ५ सितम्बर को प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मना कर उन्हें सम्मानित करने का निश्चय किया गया।

हम अपने आप से प्रश्न कर सकते हैं: आदर्श अध्यापक कौन है? अध्यापक उसे कहते हैं जो दूसरों को ज्ञान प्रदान करता है। किन्तु अध्यापक ऐसे जीवन मूल्य, सिद्धान्त तथा मानदण्ड की शिक्षा भी देता है जो मानव आचार-व्यवहार को अनुशासित करते हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा की एक अनोखी गुरुकुल प्रणाली थी। शिक्षक, विद्यार्थी में जीवन के प्रति एक उच्चतर दृष्टिकोण की ज्योति प्रज्वलित कर देता था और वह एक नये प्रकार के व्यक्तित्व के रूप में विकसित होता था।

शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य दो तरफा सम्बन्ध होता है। डॉ. राधाकृष्णन ने स्वयं इसे परिभाषित किया है। ''देश के सर्वश्रेष्ठ मानस को अध्यापक होना चाहिये। उनमें सद्‌गुण और साधुता के लिए प्रेम के साथ-साथ शिष्यों के प्रति सच्चा प्यार होना चाहिये। यह, बदले में, अध्यापक के प्रति छात्रों में सम्मान की भावना उत्पन्न करता है।

प्रायः कहा जाता है कि एक परम्परा के निर्माण में इतिहास की शताब्दियाँ लग जाती हैं। भारत ने प्राचीन काल से ही ऐसी परम्परा का निर्माण किया है। शिक्षक-शिक्षार्थी के सम्बन्ध की इस परम्परा का लाभ हमें आधुनिक काल में भी मिलते रहना चाहिये।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (फरवरी-'०५)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

धनी पड़ोसी

जगतराम इसलिए चुप रहा, क्योंकि वह कोई उचित निर्णय मन में नहीं कर पा रहा था। एक तरफ तो औलाद के बिछड़ने का दुख, दूसरी तरफ लड़के का सुखमय भविष्य; दोनों विषयों को मन में सोचकर वह कोई जवाब नहीं दे पा रहा था।

दूसरी बात, धनीराम ने विषय बढ़ा कर अपना कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया और न ही उसके साथ भावनात्मक स्तर पर पारिवारिक सम्बन्ध जोड़ने की बात कही। और यह भी नहीं कहा कि इससे जगतराम के पूरे परिवार को क्या लाभ होगा, जिससे जगतराम को लड़के से बिछड़ने का दुख कम हो जाता। धनीराम ने जगतराम के सामने सिर्फ अपने दृष्टिकोण से अपने लाभ की बात रखी, जिससे उसका स्वार्थ साफ झलक रहा था।

धनीराम का वास्तविक उद्देश्य यही था कि उसके कोई संतान नहीं थी और उसके एक लड़के को गोद लेने के पश्चात उसे संतान तथा वारिस दोनों का ही सुख मिल जाता।

धनीराम की स्वार्थ भावना को जानते हुए जगतराम मौन रहा। अगर धनीराम जगतराम के लड़के को गौद लेने पर उनके परीवार के लिए कुछ करता तो शायद वह मान लेता।

यदि जगतराम इनकार कर देता तो धनीराम यही प्रस्ताव लड़कों के समक्ष रखता तो वे सहर्ष स्वीकार कर लेते, क्योंकि कम से कम उनका एक भाई तो सुखमय जीवन बिताता जबकि भाइयों को उससे बिछड़ने का गम ज़रूर होता।

आंचल जैन
ई-७४१, वैशाली नगर,
जयपुर-३०२०२१

धर्म की जीत

लक्ष्मीपुर नामक गाँव में अनुपम नामक एक धनी रहा करता था। धन के साथ साथ वह कितने ही उपजाऊ खेतों का मालिक भी था। गरीब किसानों से वह खेती करवाया करता था और इसके लिए आवश्यक पूंजी भी उन्हें देता था। किसान प्यार से उसे ज़मींदार कहकर बुलाते थे। बिना किसी कमी के वे आराम से ज़िन्दगी गुजार रहे थे। अनुपम के पूर्वज महान मल्लयोद्धा थे। वह भी स्वयं उत्तम कोटि का मल्लयोद्धा था। अपने पूर्वजों की स्मृति में वह हर साल मल्लयुद्ध प्रतियोगिताएँ चलाया करता था। विजेताओं को वह पुरस्कार प्रदान करता था और उन्हें प्रोत्साहन देता था। इस वजह से अनुपम का नाम सब लोग जानते थे।

लक्ष्मीपुर, समस्तपुर ज़मींदारी के गाँवों में से एक था। समस्तपुर के ज़मींदार कृष्णभूपति ने अनुपम के बारे में सुना। उसने दिवान से कहा, ''लक्ष्मीपुर हमारी ज़मींदारी का एक हिस्सा ही है न? सुना है कि अनुपम ने हमसे भी अधिक ख्याति कमायी। हम अगर इसे ऐसा ही बरक़रार रहने देंगे तो वह और मशहूर हो जायेगा। चूँकि हम ज़मींदार हैं, इसलिए ऐसा कोई उपाय सोचिये, जिससे उसके खेत हमारे अधीन हो जायें।''

इस पर दिवान ने बिनयपूर्वक कहा, ''प्रभु, ऐसे विषयों में बैर से बढ़कर मैत्री ही सही होगी। अनुपम की एक सुंदर बेटी है। हमारे युवराज भी शादी की उम्र के हो गये हैं। अनुपम की पुत्री को अपनी बहू बना लीजिये।''

कृष्ण भूपति को यह सलाह अच्छी लगी। ठाठ-बाट से वह लक्ष्मीपुर गया। अनुपम ने सादर उसका स्वागत किया। दोनों ने कुछ देर तक गाँव की हालत पर आपस में चर्चा की। आखिर कृष्ण भूपति ने विवाह का प्रस्ताव रखा।

अनुपम ने मुस्कुराते हुए कहा, ''प्रभु, आप ज़मींदार हैं। मैं सामान्य हूँ। मेरा मानना है कि मेरी

मार्कंडेय शास्त्री

बेटी ज़मींदार के परिवार में समा नहीं सकती। दूसरी बात यह है कि अपने एक जिगरी दोस्त के बेटे के साथ उसकी शादी करने का बहुत पहले ही वचन दे चुका हूँ। कुछ ही दिनों में उनका विवाह भी संपन्न होगा। क्षमा कीजिये।''

ज़मींदार कृष्ण भूपति नाराज़ हो उठा। बगल ही में बैठे दिवान ने कहा, ''घर में लक्ष्मी आयी है और तुम उसे ठुकरा रहे हो। यह भूल भी रहे हो इस विवाह के लिए सहमति न देने पर तुम पर क्या बीतेगा।''

अनुपम भयभीत हो गया। उसने धीमे स्वर में कहा, ''मुझे सोचने के लिए थोड़ा समय दीजिये।''

ज़मींदार परिवार सहित लौट आया। उनके चले जाने के बाद अनुपम ने इसके परिणामों पर खूब सोचा-विचारा। उसे लगा कि ज़मींदार से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसने यह भी निर्णय लिया कि जो भी हो, दोस्त के बेटे के साथ ही उसकी बेटी की शादी होगी। उसने अपने इस निर्णय को तुरंत कार्यान्वित भी किया। दोस्त के बेटे से बेटी की शादी करा दी।

ज़मींदार ने इसे अपमान माना। उसने दिवान से कहा, ''आपकी सलाह पर मैं लक्ष्मीपुर गया। देख लिया न, क्या हुआ? आपको मालूम है कि मुझे अनुपम की बेटी नहीं मुझे उसकी जायदाद चाहिये। घोषणा कर दीजिये कि आज ही उसकी संपत्ति हमारे अधीन हो जायेगी।'' क्रोध-भरे स्वर में उसने कहा।

उस समय युवराज शांतिवर्मा भी वहाँ उपस्थित था। उसने पिता से कहा, ''अनुपम ने आपका ही नहीं, मेरा भी अपमान किया। उसने मुझे दामाद बनाने से इनकार करके बड़ा अपराध किया। मैं खुद उसे सबक़ सिखाऊँगा। इसके लिए मैंने एक उपाय भी सोच रखा है।''

तब शांतिवर्मा ने उस उपाय पर प्रकाश डालते हुए कहा, ''आप तो जानते ही हैं कि मल्लयुद्ध में मेरी बराबरी का कोई है नहीं। उस वृद्ध अनुपम को मैं आसानी से हरा सकता हूँ। मल्लयुद्ध के नियमों के अनुसार, मैं अनुपम को प्रतियोगिता के लिए बुलाऊँगा। मैं शर्त रखूँगा कि अगर वह हार जाए तो अपनी जायदाद मेरे सुपुर्द करे। यह नाइन्साफी लगे, पर यह अचूक उपाय है।''

जैसा सोचा था, मल्लयुद्ध की प्रतियोगिता में

शांतिवर्मा ने प्रसिद्ध मल्लयोद्धाओं को भी आसानी से हरा दिया। तब उसने सबके सामने घोषणा की, "ये प्रतियोगिताएँ तभी सफल मानी जाएँगी, जब मेरा मुकाबला श्री अनुपम से हो। श्री अनुपम अगर जीत जाएँ तो मैं उन्हें बराबर का ज़मींदार मानूँगा। अगर उनकी हार हो जाए तो उनकी जायदाद मेरी हो जायेगी और वे एक सामान्य नागरिक की तरह जीवन बिताएँगे।"

यह सुनते ही अनुपम के किसानों, ग्रामीणों तथा वहाँ उपस्थित और लोगों ने इसका ज़ोरदार विरोध किया। इसे अन्याय कहते हुए वे चिल्लाने लगे। अनुपम ने नाराज़ लोगों को शांत करते हुए कहा, "आप शांत हो जाइये। हाँ, मानता हूँ कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ, फिर भी मुझमें लड़ने की शक्ति है। उनकी चुनौती स्वीकार करूँगा। मेरा पूरा विश्वास है कि धर्म की विजय होगी।" कहते हुए वह आगे आया।

अनुपम के मुख की दीप्ति और तेजस्व को देखकर एक क्षण के लिए शांतिवर्मा चौंक उठा। अंदर ही अंदर उसमें डर पैदा हो गया। "धर्म की विजय होगी" उसके कानों में गूँजने लगा।

अनुपम और शांतिवर्मा के बीच मल्लयुद्ध शुरू हो गया। पर, विचित्र बात यह हुई कि पहले ही दौर में युवराज ज़मीन पर गिर गया। वह अपने को असहाय महसूस करने लगा। मन ही मन उसने ठान लिया कि अनुपम को जीतना असंभव है। उसने लोगों को संबोधित करते हुए और अपनी हार मानते हुए कहा, "उम्र, बल, प्रशिक्षण की दृष्टि से मुझे ही जीतना चाहिये था, परंतु पहले ही दौर में श्री अनुपम ने मुझे ज़मीन पर पटक डाला, इसका कारण शायद उनका धर्म बल ही होगा।"

कृष्णभूपति ने सोचा भी नहीं था कि मल्लयुद्ध का यह परिणाम होगा। उसे पूरा विश्वास था कि उसका बेटा ही जीतेगा। इस परिणाम को लेकर वह बेहद दुखी हुआ। कर भी क्या सकता था? उसने अनुपम को बधाई दी और युवराज सहित समस्तुपर लौट गया। अनुपम यथावत् किसानों का आदर करता रहा, भरसक उनकी सहायता करता रहा और यों लंबे अर्से तक उसने सुखी जीवन बिताया।

जीने की राह

सत्यवान लक्ष्मी का इकलौता बेटा था। लक्ष्मी ने बड़े ही प्यार से उसे पाला-पोसा। सत्यवान जब पाँच साल का था, तब उसका पिता अकस्मात् मर गया। तब से लक्ष्मी इतोधिक प्यार से उसकी परवरिश करने लगी।

ऐसे तो सत्यवान स्वभाव से अच्छा था, पर बुरे दोस्तों की वजह से ख़राब होता गया। व्यर्थ ही खर्च करने लगा। देखते-देखते जायदाद, धरती जाने लगी। माँ उसे बहुत समझाती थी, पर वह सुनता ही नहीं था। जब वह बीस साल का हो गया तब माँ को यह चिंता सताने लगी कि भविष्य में उसका क्या होगा। इसी चिंता के कारण लक्ष्मी मर गयी।

माँ के मर जाने के कुछ ही समय बाद सत्यवान बेघर हो गया। अब उसके पास कुछ नहीं रहा। आगे कैसे जीऊँ, उसकी समझ में नहीं आया। वह अपने गाँव में रह नहीं सका और दूसरे गाँव में रहने लगा। परंतु वहाँ भी कोई उसकी सहायता करने आगे नहीं आया। निराशा उसमें घर कर गयी। उसने वह गाँव भी छोड़ दिया। उसे लगने लगा कि मरने के अलावा कोई और चारा नहीं है।

यही सोचता जब वह रास्ते से गुज़रने लगा तब उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत एक इमली के पेड़ के नीचे बैठी छुट्टे पैसे गिन रही है। जब उसने सत्यवान को देखा, तो उसे पेड़ की छाया में आने को बुलाया और उससे कहा, ''क्या बात है बेटे, इस कड़ी धूप में कहाँ जा रहे हो?'' फिर उसने उसके फीके चेहरे को ध्यान से देखकर कहा, ''लो, ये दो शरीफ़े। खाकर अपनी भूख मिटा लो।''

सत्यवान ने संकोच-भरे स्वर में कहा, ''मेरे पास पैसे नहीं हैं।''

''पैसों की बात छोड़ो। तुम तो मेरे पोते के

नारायण मार्ग

समान हो। इन्हें खा लो।'' बूढ़ी ने बड़े ही प्यार भरे स्वर में कहा।

सत्यवान ने दोनों फल खा लिये और बूढ़ी का दिया पानी पी लिया। बूढ़ी थोड़ी देर तक अपने आप बड़बड़ाती रही और फिर कहने लगी, ''देखो बेटे, मेरी उम्र अस्सी है। मेरी ही आँखों के सामने बेटे, पोते सब भगवान के प्यारे हो गये। जब तक वहाँ से बुलावा नहीं आता, तब तक मुझे भी जीना पड़ेगा ना? इसीलिए इन फलों को बेचकर जी रही हूँ। इसी को मैंने जीने की राह बना ली है।'' कहती हुई टोकरी सिर पर रख चलती बनी।

सत्यवान को बूढ़ी के जीने की आशा पर आश्चर्य हुआ। वह वहाँ से निकलकर जंगल से होता हुआ आगे बढ़ने लगा। अचानक एक पेड़ की टहनियाँ टूटकर ज़मीन पर गिरने लगीं। उसने सिर उठाकर ऊपर देखा। देखा कि बारह साल की उम्र का एक लड़का टहनियों को काट रहा है।

सत्यवान को उसपर दया आयी। उसने लड़के से कहा, ''तुम तो बहुत छोटे हो। इस छोटी उम्र में इतना भारी काम क्यों करने लग गये? घर छोड़कर यहाँ आने की क्या ज़रूरत है?'' टहनियों से झाँक कर सत्यवान को देखते हुए लड़के ने कहा, ''महाशय, घर पर ही बैठा रहूँ तो खाना कौन खिलायेगा? इन लकडियों को बेच कर ही खा पाता हूँ। मेरे माँ-बाप नहीं रहे। मेहनत करूँगा, तभी पेट भर पाऊँगा।''

लड़के की बातों ने सत्यवान के मन को झकझोर दिया। उसे तब उस बूढ़ी की भी याद आयी, जो बुढ़ापे में भी पेट भरने के लिए मेहनत
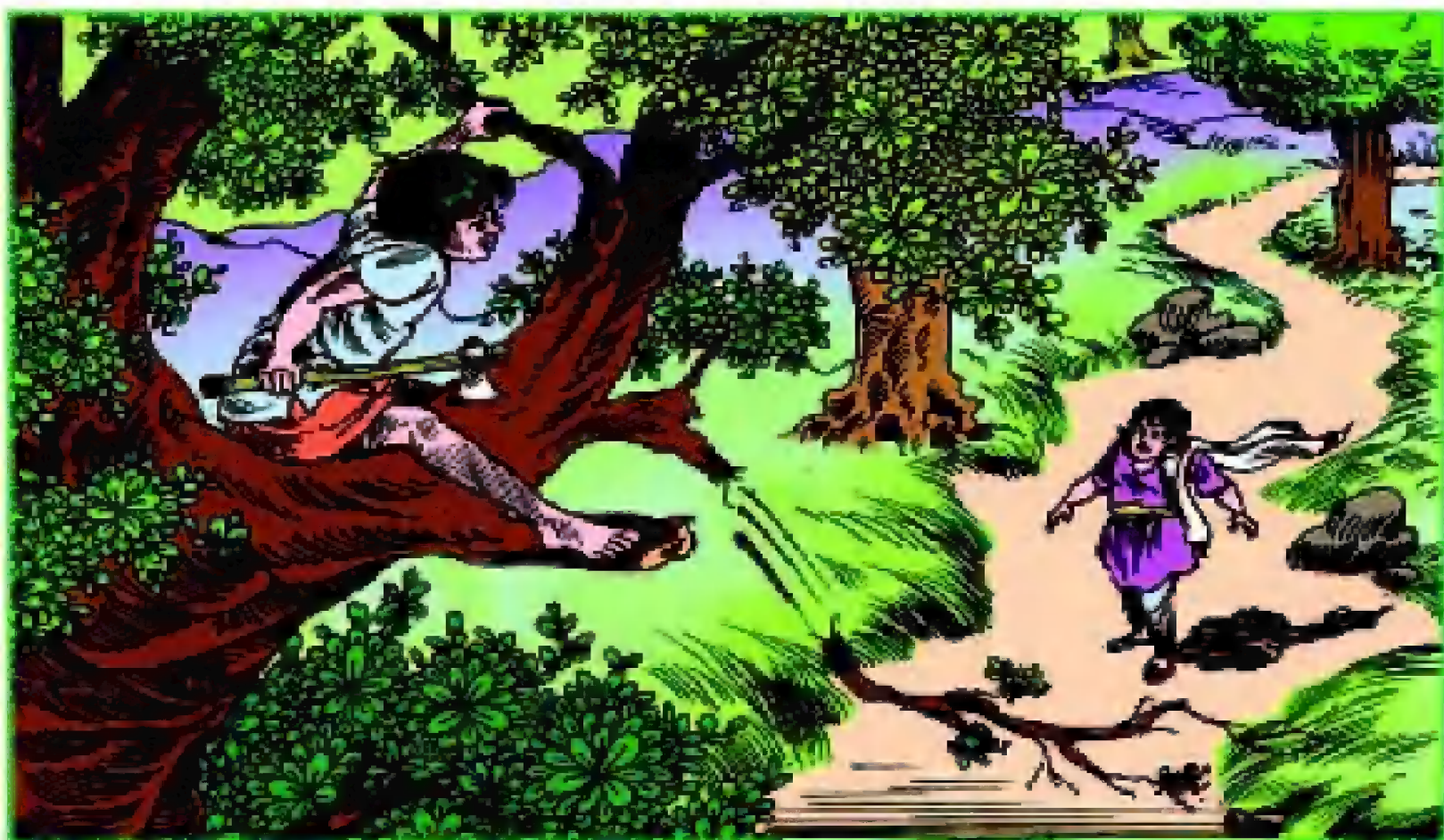
कर रही है। और यह अनाथ बालक छोटी उम्र में मेहनत करके अपना पेट भर रहा है। अब उसे ज्ञात हो गया कि इस दीन स्थिति का कारण वह स्वयं है। वह तुरंत अपना गाँव पहुँचा और सीधे मुखिया परांकुश के घर गया।

बरामदे में बैठे परांकुश ने सत्यवान को देखते ही पूछा, ''क्या बात है, सत्यवान? इतने दिनों तक कहाँ थे? मुझसे कोई काम है क्या?''

प्रणाम करते हुए सत्यवान ने कहा, ''साहब, आप मेरे पिता को जानते हैं। उन्होंने जो जायदाद दी, उसे मैंने बुरे व्यसनों का शिकार होकर फूँक डाला। पेट भरने के लिए अब मुझे कोई नौकरी दिलायेंगे तो ज़िन्दगी भर आपका आभारी रहूँगा। मज़दूरी भी करने को तैयार हूँ।''

मुस्कुराते हुए परांकुश ने कहा, ''जब चाहो, मज़दूरी नहीं मिलती। तुममें ऐसा परिवर्तन आये, यही चाहती थी तुम्हारी माँ! परंतु बेचारी निराश होकर मर गयी। लेकिन मरने के पहले उसने तुममें परिवर्तन आने पर, मेहनत करके जीने का निश्चय करने के बाद, तुम्हारे सुपुर्द करने के लिए वह थोड़ी सी रक़म व दो एकड़ उपजाऊ ज़मीन मेरे हवाले करके गयी। ठहरो।'' कहकर परांकुश घर के अंदर गया। रक़म और खेत से संबंधित कागज़ात लाकर सत्यवान के सुपुर्द कर दिया।

सत्यवान ने उन्हें लेकर मुखिया को सादर प्रणाम किया। तब मुखिया परांकुश ने कहा, ''सत्यवान, तुम्हारी माँ को विश्वास था कि किसी न किसी दिन तुम सुधरोगे और वह विश्वास आज सच हो गया। मेहनत करोगे, इज़्ज़त के साथ जीने का निर्णय कर लोगे, अच्छे मार्ग पर चलोगे तो माँ की दी हुई संपत्ति को दस गुना बढ़ा सकते हो। तुम खुद जरूरतमंद लोगों को जीने की राह दिखाने के योग्य बनोगे। मेहनत की कमाई से जीने में अपार सुख और आनंद है।

सत्यवान ने एक बार और मुखिया को प्रणाम किया और मन ही मन माँ के प्रति कृतज्ञता प्रकट की, जिसने उसके भविष्य के लिए इतनी सावधानी बरती। उसने उसी क्षण ठान लिया कि मेहनत करूँगा, लोगों का आदर-पात्र बनूँगा और माँ की आशा की पूर्ति करूँगा।

भयंकर घाटी

बहुत पहले ब्रह्मपुरी नगर के निकट एक जंगल में केशव नामक एक युवक रहा करता था। वह पशुओं को चराया करता था। उसकी माँ कुछ साल पहले ही मर गयी थी। उसके परिवार में उसका बूढ़ा बाप मात्र था। वह हर रोज़ सबेरे दूध दुहता था और उसे शहर में बेचने चला जाता था। जो रक़म मिलती थी, उससे घर के लिए आवश्यक चीज़ें खरीद कर ले आता था।

केशव और उसका बाप जंगल के बीच एक झोंपडी में रहते थे। आस-पास कोई गाँव नहीं था। उस जंगल के चारों ओर पर्वत ही पर्वत थे। केशव हर रोज़ पशुओं को चराने पर्वतों के पास ले जाता था और वहाँ की हरी-भरी भूमि में चरने उन्हें छोड़ देता था। कभी-कभी उसके मन में पर्वत पर चढ़ने की इच्छा होती थी। परंतु पिता ने बहुत पहले ही उसे ऐसा करने से मना कर दिया था। वह बेटे से कहा करता था कि पर्वत की गुफाओं में बड़े-बड़े सर्प, बाघ, रीछ आदि भयंकर जंतु हैं। यह उसका विश्वास मात्र था।

एक दिन केशव ने पशुओं को चरने छोड़ दिया और एक वृक्ष से सटकर बैठ गया। धनुष हाथ में लिया और टहनियों व उन पर बैठे पक्षियों को निशाना बनाकर बाणों की बौछार करने लगा। जब वह इस अभ्यास में मग्न था, तब पर्वत पाद की चट्टानों पर से एक विकृत ध्वनि सुनायी पड़ी। इस ध्वनि को सुनते ही वह पहले भय के मारे कांप उठा पर उसने तुरंत अपने को संभाल लिया और उस ओर ध्यान से देखने लगा, जिस ओर से यह ध्वनि निकली थी। उसने देखा कि एक विचित्र जानवर वहाँ के एक ऊँचे पत्थर पर

उछलता हुआ आकर खड़ा हो गया। वह घोड़े के आकार का था, पर उसके शरीर पर बड़ी-बड़ी धारियाँ थीं, जैसे जंगली गधे पर होती हैं। उसके मुख पर लंबा एक ही बड़ा सींग था।

उस विचित्र जानवर को देखकर केशव आश्चर्य में डूब गया। उसने कभी सुना भी नहीं था कि ऐसा भी जंतु होता है। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। वह उसे निशाना बनाकर बाण चलाने के लिए सोच ही रहा था कि इतने में उसने देखा कि वह विचित्र जंतु पत्थर पर खड़े होकर पूँछ से अपने शरीर को झाड़ रहा है और अपनी गर्दन के ऊपर के अयाल को उड़ाता हुआ उसी की ओर घूमकर देख रहा है।

इसी को अच्छा मौक़ा समझ कर केशव ने धनुष की रस्सी को अपने कान तक खींचकर उस पर बाण चला दिया। वह बाण उसे लगे, इसके पहले ही वह विचित्र जंतु पत्थर पर से कूदा और ज़मीन पर आकर खड़ा हो गया।

चकित केशव एक और बाण उसपर चलाने ही वाला था कि इतने में वह बड़ी ही तेज़ी से कूदता हुआ उसके पास आया और केशव के हाथों से बाणों को खींच लिया और उन्हें दूर फेंक दिया।

केशव को लगा कि अब उसकी जान को ख़तरा है। पर उसने साहस नहीं खोया। मन ही मन उसने ठान लिया कि किसी भी आफत का सामना डटकर करूँगा, चाहे जो भी हो जाए। वृक्ष के पास ही पड़ी लाठी वह हाथ में लेने ही वाला था कि उस विचित्र जंतु के व्यवहार में उसने अकस्मात् परिवर्तन देखा।

वह बड़ी ही विनम्रता के साथ सिर हिलाता हुआ उसके पास आया और अपने थूथन को उसके कंधे पर रख दिया।

केशव चकित रह गया। उसे लगा कि इस जंतु में मानव के मनोभावों को जानने की दिव्य शक्ति है। अब उसे विश्वास होने लगा कि यह जंतु उसे हानि नहीं पहुँचानेवाला है।

केशव ने उत्साहपूर्वक उस जंतु की पीठ पर अपना हाथ रखा। बस,वह विचित्र जंतु घोड़े की तरह कूदने लगा और अपना सिर उठाकर हिनहिनाने लगा।

केशव ने सोचा कि यह शायद घोड़े की जाति

का हो सकता है। जैसे ही उसके मन में यह विचार आया, उसमें उस पर सवार होने की तीव्र इच्छा पैदा हो गयी। वह तुरंत उसकी पीठ पर बैठ गया।

वह विचित्र जंतु इस बार और ज़ोर से हिनहिनाया और धीरे-धीरे पर्वत की तरफ़ जाने लगा।

केशव को लगा कि लगाम और ज़ीन के बिना ही इस पर सवार हो सकते हैं। जैसे-जैसे वह पर्वत की ओर बढ़ता गया, वैसे-वैसे उसकी चाल में तेज़ी आने लगी।

केशव इस तेज़ी की वजह से गिरने ही वाला था, पर उसने उसका अयाल कसकर पकड़ लिया और अपने को संभाल लिया।

इतने में वह जंतु गेंद की तरह उछला और एक चट्टान पर चढ़ गया। केशव डर गया। मन ही मन उसने सोचा, 'यह जंतु मुझे पर्वत पर ले जाना चाहता है। वहाँ की गुफाओं में बाघ, रीछ आदि कितने ही भयानक जानवर रहते हैं। वहाँ मायावी राक्षस भी तो हो सकते हैं। मांत्रिक-तांत्रिक भी ऐसे ही एकान्त और सुनसान कन्दराओं में अपनी साधना करते हैं। उसके पिता ने शायद इसीलिए पर्वतों के ऊपर जाने से मना किया है। यह तो खतरा मोल लेना है।' ऐसा सोचते हुए वह उस पर से कूद पड़ा।

विचित्र जंतु भी चट्टान पर से उतर गया और उसके चारों ओर घूमने लगा। केशव की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। वह उस वृक्ष के पास आ गया, जहाँ वह साधारणतया बैठता था।
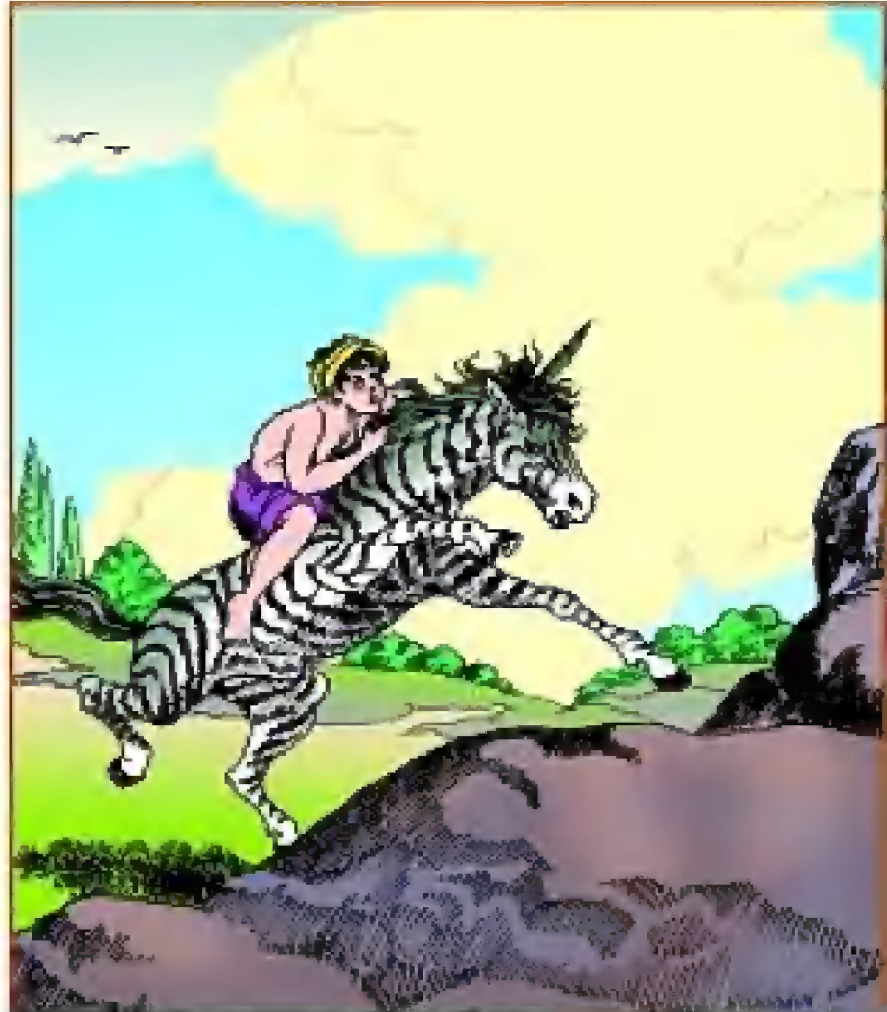
विचित्र जंतु भी उसके पीछे-पीछे वहाँ चला आया।

केशव सोच में पड़ गया। आज तक उसने ऐसे जंतु को देखने की बात तो दूर, सुना तक नहीं था। किसी ने कहा भी नहीं कि ऐसा जंतु हमारे राज्य के किसी कोने में पाया जाता है। वह पर्वत से उतरकर उसके पास चला आया। उसपर सवारी करनी चाही तो उसने उसे पर्वत पर ले जाने की कोशिश की। इसका यह मतलब हुआ कि पर्वत पर ही उसका निवास स्थान कहीं होगा। इसे पकड़कर ले जाऊँ और ब्रह्मपुरी में बेच दूँ तो काफी धन भी मिल सकता है। किन्तु, क्या ऐसा करना ठीक होगा?

केशव सोचता ही रहा, पर वह कोई निर्णय नहीं ले पाया। तब वह विचित्र जंतु उसके पशुओं

के झुंड में मिल गया और उनके साथ-साथ हरी घास चरने लगा। केशव की गायें उसे देखकर पहले डर गयीं पर क्रमशः उसके साथ हिल-मिल गयीं। केशव ने सोचा कि शाम तक वह उसकी गायों के साथ रहेगा और सूर्यास्त के बाद पर्वत पर चला जायेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। अंधेरा छा जाने पर जब वह अपनी गायों को अपनी झोंपड़ी के पास ले आया, तब वह भी उसकी गायों के साथ वहाँ आ गया। केशव ने पशुओं को चारा डाला और झोंपड़ी के अंदर चला गया।

वह सोचता रहा कि इस विचित्र जंतु के बारे में पिता से कहूँ या नहीं। किसी निर्णय पर न आ पाने के कारण वह भोजन कर सो गया।

सबेरे ही केशव के पिता ने उसे जगाया और कहा, ''केशु, उठो। हम बाल-बाल बच गये। रात को हमारे मवेशियों के झुंड में एक भेड़िया घुस आया। पता नहीं, वह यहाँ कैसे आ गया?'' घबराहट-भरे स्वर में उसने कहा।

केशव चौंक कर उठ बैठा। उसे तुरंत उस विचित्र जंतु की बात याद आयी। पिता उसे भेड़िया समझ बैठे। बुढ़ापे के कारण उनकी आँखें कमज़ोर पड गयीं, इसीलिए घोड़े जैसे ऊँचे विचित्र जंतु को देखकर भी उसे भेड़िया समझ बैठे। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह विचित्र जंतु ही रात को भेड़िया बन गया हो और उसकी गायों को मारकर भाग गया हो? उसके मन में विचित्र जन्तु के बारे में तरह-तरह की शंकाएँ उठने लगीं।

केशव ने पूछा, ''उस भेड़िये ने हमारी कितनी गायों को मार डाला?''

''भगवान की दया से ऐसा कुछ नहीं हुआ। भेड़िया मुझे देखते ही जंगल की ओर भाग गया।'' पिता ने कहा।

केशव ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, "जिस जानवर को तुमने देखा, वह शायद भेड़िया न हो। कल शाम को एक विचित्र जंतु पर्वत पर से उतर कर आया और हमारी गायों के झुंड में घुस गया।" फिर उसने पिता को पूरा विवरण बताया। पिता ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "मैंने कोई विचित्र जंतु झुंड में नहीं देखा। कहते हो कि वह पर्वत पर से आया है। यदि ऐसा है तो सावधान रहना। वह कोई मायावी राक्षसी होगी। पर्वत की कन्दराओं में मायावी जादूगर भी रहते होंगे जो जानवरों का रूप बना लेते हैं।"

पिता की बातों पर ठठाकर हँसते हुए केशव ने कहा, "राक्षसी मुझे सचमुच ही पकड़ कर ले जाना चाहती तो उसी रूप में आती। विचित्र जंतु के रूप में भला क्यों आती? वह विचित्र जंतु रात ही को जंगल में चला गया होगा।"

वह यों कह कर उस जंतु को जैसे भूलने की कोशिश करने लगा, किन्तु फिर भी वह उसके मन में एक पहेली की तरह छाया रहा।

केशव का पिता जब दूध लेकर नगर की ओर चल पड़ा तब केशव ने जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो लिये, नहाया और बासी भात खाकर गायों को पर्वत के पास ले जाने झोंपड़ी से बाहर आया।

उसने ध्यान से देखा कि कहीं वह विचित्र जंतु इस झुंड में तो नहीं है, पर उसे उसका कहीं पता नहीं चला।

केशव गायों को पर्वत के पास ले गया, उन्हें हरी घास चरने छोड़ दिया और उसी वृक्ष के पास
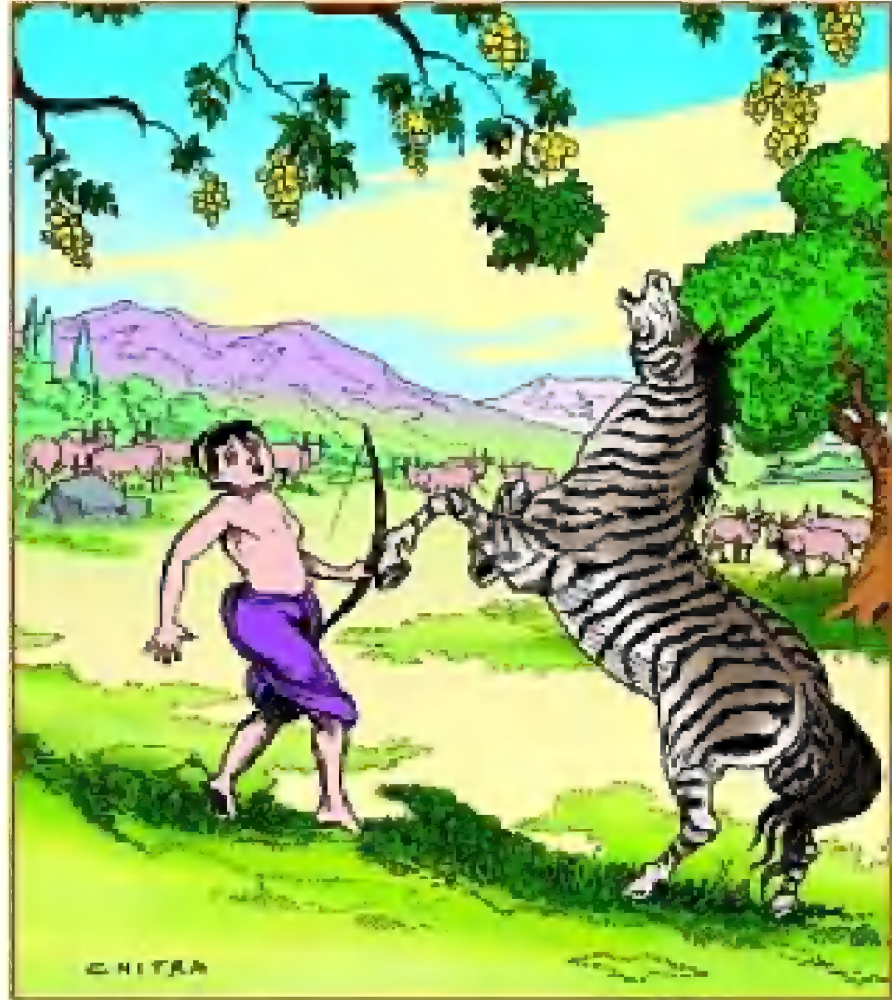
बैठ गया, जहाँ वह साधारणतया बैठता था। वह निरुद्देश्य पर्वत पर बाण चलाये जा रहा था। अकस्मात् पीछे से उस विचित्र जंतु की विकृत हिनहिनाहट सुनायी पड़ी। केशव ने चौंककर पीछे की ओर देखा। विचित्र जंतु पीछे के पैरों पर खड़े होकर और ज़ोर से हिनहिनाने लगा और उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"फिर आ गये? मैं तो तुम्हारी बात भूल ही गया," केशव ने कहा। विचित्र-जंतु ने 'हाँ' के भाव में अपना सिर हिलाया। पर इतने में उसे अपने पिता की बातें याद आयीं, "कहीं यह कोई मायावी राक्षसी तो नहीं।" मन ही मन वह इसी बात को लेकर सोच में पड़ गया। विचित्र जंतु तुरंत मुड़ा और गायों की झुंड की ओर निकल पड़ा। उसकी इस चेष्टा से लग रहा था मानों उसने

केशव के मन के भावों को ताड़ लिया हो। केशव थोड़ी देर तक उसे संदेह की दृष्टि से देखता रहा और ऊबकर फिर से बाण चलाने लगा। इस बार पेड़ों पर लक्ष्य कर बाण चला रहा था।

यों थोड़ा समय और बीत गया। तभी कुछ दूरी से घोड़ों के दौड़े आने की आवाज़ होने लगी। देखते-देखते दो घुड़सवार केशव के पास आये और उसे अजीब ढंग से देखते हुए चिल्लाने लगे।

"महासेनानी, लगता है, यहाँ कोई एकलव्य है।"

"एकलव्य! तो फिर देरी क्यों? उसकी उंगलियाँ काट डालो," कहता हुआ एक और घुड़सवार वहाँ आया। उसकी पोशाक कीमती लगती थी। उसका घोड़ा भी सजा हुआ था।

"इतना घमंड। खड़े क्यों नहीं हो जाते? जो पधारे हैं, उन्हें क्या समझ रखा है? वे ब्रह्मपुरी के महासेनानी हैं," एक घुड़सवार ने कहा।

केशव फ़ौरन खड़ा हो गया और हाथ जोड़कर महासेनानी को प्रणाम किया। सेनानी उसे, उसके धनुष-बाणों को ग़ौर से थोड़ी देर तक देखता रहा और फिर अपनी मूँछों पर उंगलियाँ चलाते हुए कहा, "अरे, तुम कौन हो? क्षत्रिय हो? किसके प्राण हरने के लिए धनुर्विद्या सीख रहे हो?" तीखी आवाज़ में उसने प्रश्न किया।
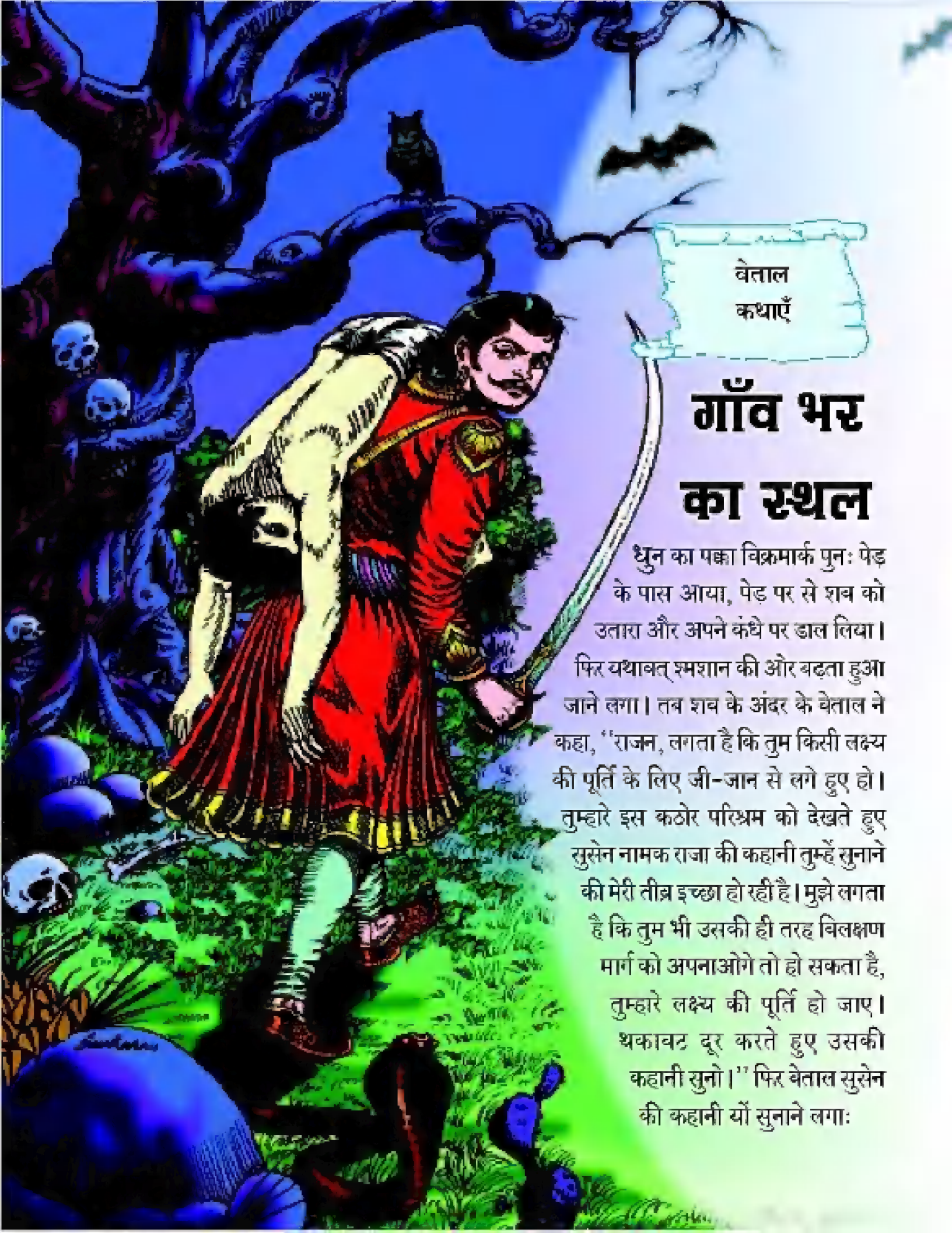
"साहब, मैं एक किसान का बेटा हूँ। इस लोक में मेरे कोई दुश्मन नहीं हैं। समय बिताने के लिए अपने साथ बाण ले आया हूँ। देखिये, वहाँ पर्वत के पास मेरी गायों का झुंड घास चर रहा है।" केशव ने विनयपूर्वक जवाब दिया।

सेनानी गायों के झुंड की तरफ देख ही रहा था कि इतने में एक घुड़सवार चिल्लाते हुए कहने लगा, "देखिये, महासेनानी, देखिये, पंचकल्याणी! देवताश्व लगता है।" उसने विचित्र जंतु की ओर इशारा करते हुए कहा।

सेनानी आश्चर्य भरे नेत्रों से उसे देखता रहा और फिर कहा, "वह पंचकल्याणी नहीं है, देवताश्व भी नहीं है। वह तो जंगली गधा लगता है। पर जंगली गधा तो इतना ऊँचा नहीं होता। मैंने कभी सुना ही नहीं कि ऐसा जानवर भी होता है। उसे हाँककर यहाँ ले आना।" ***(सशेष)***

वेताल
कथाएँ

गाँव भर का स्थल

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास आया, पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन, लगता है कि तुम किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए जी-जान से लगे हुए हो। तुम्हारे इस कठोर परिश्रम को देखते हुए सुसेन नामक राजा की कहानी तुम्हें सुनाने की मेरी तीव्र इच्छा हो रही है। मुझे लगता है कि तुम भी उसकी ही तरह विलक्षण मार्ग को अपनाओगे तो हो सकता है, तुम्हारे लक्ष्य की पूर्ति हो जाए। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर बेताल सुसेन की कहानी यों सुनाने लगा:

सुरेन पुष्पक देश का राजा था। वह प्रजा की समस्याओं का परिष्कार विलक्षण पद्धति से करता था। वह उनकी समस्याओं का परिष्कार उन्हीं के द्वारा करता था। अपनी समस्याओं के बारे में वह सामान्य लोगों से कहता और उनसे सुझाव माँगता था। जो लोग अच्छे उपाय सुझाते थे, उन्हें मूल्यवान भेंट भी देता था।

एक बार राजमाता रुक्मिणी अकस्मात् बीमार पड़ गयी। सास के बीमार हो जाने पर बहू का उसकी सेवा करना कर्तव्य माना जाता था। राज वंशज भी इस कर्तव्य का पालन करते थे। परंतु रानी नंदिनी अपनी सास की सेवा करने के पक्ष में नहीं थी। उसने बीमार पड़ जाने का नाटक किया और शय्या पर ही लेटी रही। राज वैद्य ने उन दोनों की चिकित्सा की और उसे जानने में देर नहीं लगी कि रानी नंदिनी केवल नाटक कर रही है। पुंडरीक उसे आवश्यक शक्तिवर्धक दवाएँ देकर चला जाता था। परंतु राजमाता को दवा देने के बाद यह जानने के लिए बहुत देर तक वह वहाँ बैठा रहता था कि दवा का असर हो रहा है या नहीं। वैद्य की दवाओं से रुक्मिणी बहुत ही जल्दी चंगी हो गयी। वैद्य ने राजा को सलाह दी कि राजमाता को किसी शीतल प्रदेश में भेजा जाए। वैद्य की सलाह पर राजा सुरेन ने माता को हिम नगरी भेज दिया।

रानी को भय था कि सास की सेवा करने कहीं वह भी हिम नगरी भेजी न जाए, इसलिए वह उसके बाद भी बीमारी का नाटक करती रही। लंबे अर्से तक जब रानी के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ, तब राजा ने वैद्य से इसका कारण पूछा।

"प्रभु, मेरा संदेह है कि रानी मानसिक रोग से पीड़ित हैं। आप कोई ऐसा काम कीजिये, जिससे उनका मन संतुष्ट हो जाए। इससे जल्दी ही उनका स्वास्थ्य सुधर जाने की संभावना है।" राजा सुरेन ने, रानी नंदिनी को वैद्य पुंडरीक की कही बात सुनायी और कहा, "बताओ कि क्या करने से तुम्हारा मन संतुष्ट होगा।"

यह सुनते ही नंदिनी को पुंडरीक पर गुस्सा आ गया। उसने कड़े स्वर में सहा, "पुंडरीक ने मेरे स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया। उल्टे वह मेरे रोग को मानसिक रोग कहता है। उसकी जगह पर किसी और को नियुक्त कीजिये। इससे मुझे संतोष होगा।"

सुसेन को पूरा विश्वास था कि पुंडरीक उत्तम वैद्य है। वह इस सोच में पड़ गया कि रानी को यह कैसे समझाऊँ कि पुंडरीक उत्तम वैद्य है और उसकी जगह पर किसी और को नियुक्त करना उचित नहीं होगा। उसी समय हिमनगरी से राजामाता का संदेश मिला, कि हमारा राजवैद्य पुंडरीक, धन्वन्तरी जैसा उत्तम वैद्य है। उन्हें मूल्यवान भेंट दो और बड़े स्तर पर सम्मान करो।''

पुंडरीक को राजवैद्य के पद से हटा दिया जाए तो माँ नाराज़ होंगी और उसका सम्मान किया जाए तो पत्नी नाराज़ होगी। इस समस्या पर सोचते हुए एक दिन रात को वह भूस्वामी के वेश में लोगों से मिलने शहर गया। वहाँ दिनपाल नामक एक छोटे व्यापारी से उसका परिचय हुआ। सुसेन ने उसे अपनी समस्या बतायी।

दिनपाल ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''जब ऐसी समस्या उठ खड़ी होती है तब ऐसे व्यक्ति का उपकार करना चाहिये, जो झूठ बोल रहा है। या उसमें यह विश्वास पैदा करना चाहिये कि उसका उपकार किया जा रहा है।''

दूसरे दिन राजा सुसेन ने नंदिनी से कहा, ''राजवैद्य के पीछे गुप्तचरों को लगाया। उनसे मालूम हुआ कि वे तुम्हारा बेहद आदर करते हैं। वे नहीं चाहते थे कि तुम अपनी सास का उपचार करो। परन्तु सास से भला तुम यह कैसे कह सकती थी। इसीलिए उन्होंने तुम्हारे हित में राजमाता को सुदूर प्रांत में भेज दिया।''

नंदिनी को अब विश्वास हो गया कि वैद्य
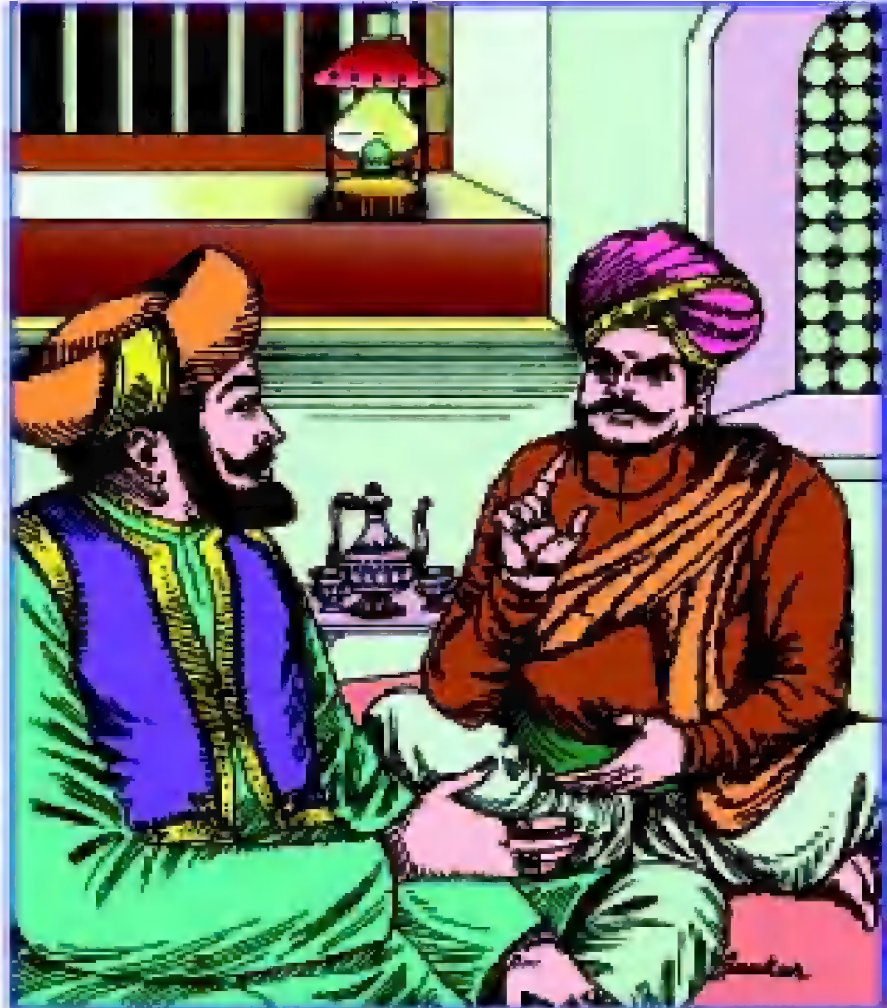
पुंडरीक अच्छे व्यक्ति हैं। अपनी ग़लतफ़हमी पर उसे पश्चाताप भी हुआ। उसने पति से कहा कि वे वैद्य को मूल्यवान भेंट अवश्य भेजें।

यों समस्या के परिष्कार से राजा को बेहद खुशी हुई। भूस्वामी के वेश में एक बार और वह दिनपाल से मिला और कहा, ''तुम्हारी सलाह सही निकली, उसका अच्छा परिणाम भी निकला। तुम्हारे जैसा योग्य व्यक्ति राजा का सलाहकार बने तो देश का हित होगा। राजा के दरबार के चंद लोगों से मेरा परिचय है। क्या उनके द्वारा राजा को यह विषय बतलवाऊँ?''

दिनपाल ने 'न' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''राजधानी में रहना मैं पसंद नहीं करता। वहाँ मेरी तबीयत ख़राब हो जायेगी। मेरे वैद्य ने मुझे लक्ष्मीपुर जाने की सलाह दी है। मैं

वहाँ रहना चाहता हूँ। किराये के लिए या बिक्री के लिए वहाँ एक ही घर खाली है जो ग्रामाधिकारी के अधीन है। वह उसे न बेचेगा, और न ही किराये पर देगा। अगर तुम्हारी बात का इतना मूल्य है तो मुझे लक्ष्मीपुर का घर दिलवा दो।''

राजा ने विश्वास -भरे स्वर में कहा, ''तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। कल ही तुम लक्ष्मीपुर चले जाओ । वह घर तुम्हें मिल जायेगा।''

ग्रामाधिकारी दुराचारी व स्वार्थी था। उसके दोनों घरों के बीच में खाली जगह थी, जो गाँव भर की थी। ग्रामाधिकारी के लोग उसमें कूड़ा-करकट फेंकते थे।

दूसरे ही दिन बहुरूपिया सुसेन, दिनपाल को लेकर लक्ष्मीपुर गया। वे ग्रामाधिकारी से मिले। सुसेन ने दिनपाल का परिचय देते हुए ग्रामाधिकारी से कहा, ''ये राजा के परिचित व्यक्तियों में से हैं। इन्हें तुम्हें अपना खाली घर बेचना होगा। यह राजा की आज्ञा है,'' कहते हुए उसने राजमुद्रिका अंकित पत्र उसे दिया।

राजा की आज्ञा को वह स्वीकार कर घर बेचने के लिए तैयार हो गया। कुछ ही दिनों में दिनपाल अपने नये घर में सपरिवार आ गया।

दिनपाल ने एक दिन ग्रामाधिकारी को दोनों घरों के बीच का कूड़ा-करकट दिखाते हुए कहा, ''अपने घरवालों से कहिये कि वे आगे से कूड़ा-करकट यहाँ न फेंकें।''

''पहले ही से यहाँ कूड़ा-करकट है। यह थोड़े ही कोई फूलों का बगीचा है।'' ग्रामाधिकारी ने लापरवाही से कहा।

दिनपाल ने उस स्थल को साफ करवाया और फूल के पौधे रोपवाये। सबकी आँखों से बचाकर ग्रामाधिकारी ने उस बगीचे में पशुओं को हंकवा दिया। इन कुकर्मों को रोकने के लिए दिनपाल ने उस स्थल के चारों ओर घेरा लगवाया और साथ ही उसकी रखवाली के लिए एक आदमी को भी नियुक्त किया। उस रखवाले से कहा भी कि गाँव का कोई आदमी माँगे तो वह उन्हें फूल मुफ़्त में दे दे। इससे गाँव के लोगों में उसके प्रति आदर की भावना बढ़ गयी।

लक्ष्मीपुर के ग्रामाधिकारी के दुष्कर्मों की जानकारी गुप्तचरों के द्वारा राजा सुसेन को मिलती रहती थी। उसके विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए वह सोच ही रहा था कि राजपरिवार के लिए

आभूषण बनानेवाले बहुरूपी नामक एक व्यापारी के सामने एक बिचित्र समस्या आ खड़ी हुई। उसकी माँ की नौकरानी गंगा के घर में उसकी पत्नी का चोरी किया गया मोती का हार पाया गया और उसकी पत्नी की नौकरानी यमुना के घर में उसकी माँ का खोया हुआ प्रवाल का हार मिला।

बहुरूपी की माँ और पत्नी दोनों दावा कर रही थीं कि उनकी नौकरानियाँ मासूम हैं और साथ ही एक तरफ़ गंगा को सज़ा देने के लिए पत्नी और दूसरी तरफ़ यमुना को दंड देने के लिए माँ जोर दे रही थीं। व्यापारी बहुरूपी ने राजा सुसेन को अपना दुखड़ा सुनाया।

सुसेन ने मुस्कुराते हुए कहा, "ऐसी समस्याओं का समाधान सिर्फ राजा ही नहीं बल्कि सामान्य गृहस्थ भी करते हैं। तुम्हारी समस्या का परिष्कार एक ही व्यक्ति कर सकता है। उसका नाम दिनपाल है और वह लक्ष्मीपुर में रहता है। उसके नाम मैं एक पत्र भी दूँगा। तुम्हारी समस्या का जो परिष्कार करेगा, वही भविष्य में ग्रामाधिकारी बनेगा। अलावा इसके, वहाँ गाँव की सार्वजनिक ज़मीन का उपयोग गाँव की भलाई के लिए कैसे हो, इसका भी वही निर्णय करेगा।"

राजा सुसेन के मुहर-बंद पत्र को लेकर बहुरूपी लक्ष्मीपुर गया। उस समय ग्रामाधिकारी गाँववालों को बता रहा था कि दिनपाल ने गाँव की ज़मीन को अपने अधीन में कर लिया और वहाँ फूलों के पौधे रोपे। इस अपराध के लिए उसे दंड भुगतना

होगा। बहुरूपी ने वहाँ पहुँचकर अपना परिचय दिया। राजा के मुहर-बंद पत्र को दिखाकर उसने कहा, "राजा की आज्ञा के अनुसार गाँव भर का वह स्थल कोई समस्या है ही नहीं। आगे ग्रामाधिकारी कौन होगा, इसका निर्णय भी मैं खुद करूँगा। ग्रामाधिकारी को चाहिये कि वह बिश्वासपात्र, बिबेकी और अनुभवी हो।" यों कहकर उसने ग्रामाधिकारी को अपनी समस्या का ब्योरा दिया।

यह सुनते ही डर के मारे ग्रामाधिकारी के हाथ-पांव फूल गये। वह बहुरूपी की समस्या का हल बता नहीं पाया। तब वहाँ उपस्थित दिनपाल आगे आकर बोला, "इसका परिष्कार बहुत आसान है। अपनी पत्नी से यह बताने को कहो कि तुम्हारी माँ की नौकरानी को क्या सज़ा

दी जाए और अपनी माँ से पूछो कि तुम्हारी पत्नी की नौकरानी को क्या सज़ा दी जाए। तब यह समस्या स्वयं सुलझ जायेगी।''

बहुरूपी इस उत्तर से बहुत प्रभावित हुआ और कहा, ''लंबे अर्से से मैं व्यापार करता आ रहा हूँ। पर, यह उपाय मुझे नहीं सूझा। तुम ही ग्रामाधिकारी बनने योग्य हो।'' उसने वहीं ग्रामाधिकारी को उस पद से हटाया और दिनपाल को नया ग्रामाधिकारी घोषित किया। उसने गाँव भर की ज़मीन के विषय में ऊँचे स्वर में ग्रामीणों से बताया ''अब से उस भूमि के विकास के लिए हर महीने राजा से धन मिलता रहेगा।''

बेताल ने यह कहानी सुना चुकने के बाद कहा, ''राजन्, राजा को जिन समस्याओं को सामना करना पड़ा, उनके परिष्कार के लिए उन्होंने एक विलक्षण मार्ग अवश्य चुना, पर वह क्या उसकी असमर्थता को सूचित नहीं करता? उसकी यह पद्धति राजोचित नहीं लगती। अनैतिक ग्रामाधिकारी को सजा और विवेकी दिनपाल को ग्रामाधिकारी का पद वह खुद दे सकता था। गाँव भर की भूमि की समस्या कठिन समस्या नहीं है। उसके परिष्कार के लिए बहुरूपी को उपयोग में लाना उचित नहीं लगता। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''राजा ने दिनपाल से यह बताये बिना ही कि वह कौन है, समस्या का समाधान जान लिया। राज परिवार की समस्याएँ अंतः पुर के बाहर मालूम न हों, इस मर्यादा का उसने पालन किया। एक समर्थ व्यक्ति को ग्रामाधिकारी का पद देने के उद्देश्य से, उसने बहुरूपी को लक्ष्मीपुर भेजा। सुसेन की शासन-पद्धति को गौर से देखने पर मालूम होता है कि वह अपने दोस्तों को पद नहीं देता, जो पदाधिकारी हैं, उनसे दोस्ती नहीं करता। क्योंकि शासन, गाँव भर की भूमि जैसी है। सुसेन सौ फी सदी निस्वार्थ है और शासन में दक्ष है।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः ''सुचित्रा' की रचना)
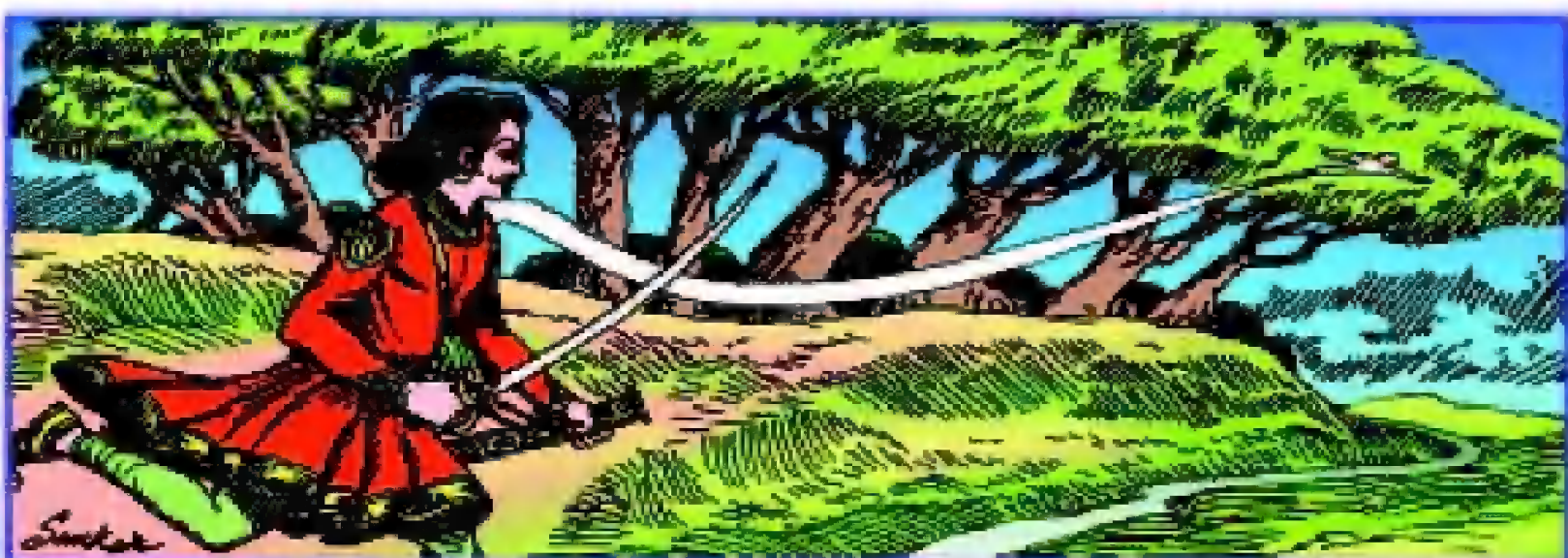
बारिश और बाँस

मि (मनुष्य), ज़ो (पर्वत) तथा राम (प्रदेश)! यानी सरल शब्दों में पर्वत पर रहनेवाले मनुष्यों का प्रदेश। मिज़ो लोग मॉंगॅलायड कुल के वंशज माने जाते हैं। ये बर्मा (अब म्यनमार) से लगभग ३०० वर्ष पहले यहाँ आये थे। यह पहाड़ी क्षेत्र बहुत वर्षों तक अपराजेय था। ईसाई मिशनरीज़ ने ही सबसे पहले यहाँ कदम रखा और यहाँ के लोगों में ईसाई धर्म का प्रचार किया। इसलिए यहाँ के लगभग ९५ प्रतिशत मिजो ईसाई धर्म मानते हैं। ये अंग्रेज़ी पढ़ते, लिखते और बोलते हैं। इनकी बातचीत की बोली अंग्रेज़ी लिपि में लिखी जाती है।

इस क्षेत्र में साल में नौ महीनों तक बारिश होती है। वर्षा के कारण काफी मात्रा में बाँस पैदा होता है। लोग चावल का भण्डारन बाँस के खोखले में करते हैं। मिज़ोराम बासी मुख्य रूप से कृषक हैं। इसलिए स्वभावतः उनके पर्व कृषि सम्बन्धी कार्यकलापों से जुड़े हुए हैं। मिज़ो भाषा में पर्व को कुट कहते हैं। इनके तीन मुख्य पर्व हैं–

चपचार कुट, मिमकुट, और पावल कुट।

बाँस नृत्य सभी पर्वों का अभिन्न अंग है। बाँस नृत्य में भाग लेने के लिए उसमें दक्ष होना आवश्यक है, नहीं तो पाँव में चोट लग सकती है अथवा चूक होने से ठोकर खाकर गिर सकते हो।

अन्य देशों (कोरिया) की अनुश्रुत कथाएं :

राजा ने अपना सबक सीखा

राजा दिनोदिन राजकुमार से अधिक परेशान रहने लगा। यह इस प्रकार हुआ:

राजा के दो बेटे थे। दूसरे बेटे को उसके नि:सन्तान मामा ने गोद लिया। किन्तु दस वर्ष बाद राजा का प्रथम पुत्र संन्यास लेकर दूर पर्वतों में किसी आश्रम में चला गया। तब तक इधर मामा के घर एक पुत्र ने जन्म लिया। इसलिए गोद लिया हुआ बेटा अपना घर वापस लौट आया।

सम्भवत: राजकुमार को, उसके प्रति किया गया यह व्यवहार – अपने घर से निकाल दिया जाना और जहाँ उसे भेजा गया था वहाँ से भी अवांछित हो जाना – अच्छा नहीं लगा। वह एक कठिन बालक साबित हुआ। वह शायद ही मुस्कुराता, शायद ही किसी से बात करता और यहाँ तक कि उसने पढ़ने-लिखने से इनकार कर दिया। वह सबके साथ रूखा हो गया।

राजा ने उसे पढ़ाने के लिए अनेक विद्वानों को शिक्षक नियुक्त किया। लेकिन उनमें से किसी को भी उसे पढ़ाने में सफलता नहीं मिली। शिक्षक बालक में आज्ञापालन की प्रेरणा भरने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी साधनों का प्रयोग करता। किन्तु सब व्यर्थ चला जाता। शिक्षक तब राजा से मिले बिना चुपचाप नौकरी छोड़ कर चला जाता।

"प्रभु, लगता है राजकुमार किसी दुष्ट शक्ति के प्रभाव में है", मंत्री ने कहा।

"तो? इस प्रभाव को कैसे नष्ट करें?" राजा ने पूछा।

"हमलोग नहीं कर सकते, प्रभु, किन्तु पहाड़ी के नीचे नदी तट पर एक ऋषि रहते हैं, जो सम्भवत: कुछ कर सकते हैं। वे लोगों से मिलना पसन्द नहीं करते। फिर भी, वे आप को मना नहीं करेंगे; वे आप को सलाह

देंगे कि राजकुमार को दुष्ट शक्ति के प्रभाव से कैसे मुक्त किया जाये।'' मंत्री ने कहा।

राजा ने बुद्धिमान मंत्री की सलाह मान ली। वह घोड़े पर सवार हो ऋषि की कुटिया में अकेले गया। उसने झुक कर ऋषि का अभिवादन किया और नम्रतापूर्वक अपना परिचय दिया।

''एक राजा मेरे जैसे दरिद्र के लिए बहुत कुछ कर सकता है। मैं राजा के लिए क्या कर सकता हूँ?'' ऋषि ने पूछा।

''ऋषिवर, मैं अभी सबसे अधिक दरिद्र और अभागा व्यक्ति हूँ,'' राजा ने कहा और ऋषि को अपनी समस्या बताई। ऋषि ने अपनी दाढ़ी पर कई बार हाथ फेरा और आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर के बाद उसने गंभीर होकर कहा, ''मैं तुम्हें अपने बेटे को शिक्षित करने में मदद कर सकता हूँ, यदि तुम बाघ की पूर्ण जाग्रत अवस्था में उसकी थोड़ी सी मूँछ स्वयं काट कर ला दो।''

राजा निराश हो गया। ''बाघ की थोड़ी सी मूँछ, हे भले ज्ञानी? लेकिन यह तो असम्भव है!''

''मनुष्य की प्रकृति को बदलने से अधिक असम्भव नहीं।'' ऋषि ने कहा, ''जाओ बच्चे, प्रयास करो। हिम्मत न हारो!''

ऋषि खड़ा हुआ और सैर करने के लिए बाहर निकल पड़ा। राजा विचार मग्न और चिन्तित अवस्था में महल में लौट आया।

राजा का अपना एक चिड़ियाघर था और उसमें एक पिंजड़े में बन्द एक बाघ था। उसने चिड़ियाघर के रखवाले को बुलाया और पूछा कि क्या बाघ को स्पर्श करना सम्भव है।

''हमलोगों का बाघ बहुत घमण्डी है, प्रभु। मैं

किसी प्रकार उसका खाना उसके पिंजड़े में खिसका देता हूँ, लेकिन निकट जाने का प्रयास नहीं करता।'' रखवाले ने कहा।

लेकिन ऋषि के आदेश में कुछ शक्ति थी। राजा ने साहसिक कदम उठाया। शाम को राजा बाघ के लिए कुछ भोजन ले गया और उसे पिंजड़े में खिसका कर देखता रहा। बाघ ने गुर्रा कर खाना खा लिया और राजा को यों देखा मानों उसका यह कार्य उसे पसन्द आया। राजा ने एक पखवारे तक इसे जारी रखा। फिर, थाली को उसने अपने हाथ में पकड़े रखा और बाघ की प्रतीक्षा की। बाघ ने उसे पहले सन्देह के साथ देखा, पर बाद में पिंजड़े के छोटे से द्वार पर आकर राजा के हाथ की थाली से खाना खा लिया।

राजा कुछ दिनों तक ऐसा करता रहा। एक

दिन बाघ खाने के बाद राजा का हाथ चाटने लगा। राजा ने समझा कि बाघ उसे प्यार कर रहा है। राजा ने बाघ को हर रोज अपना हाथ चाटने दिया। कुछ दिनों के बाद उसने बाघ के सिर पर हाथ फेरा। बाघ को यह प्यार अच्छा लगा।

यह सिलसिला एक महीने तक चलता रहा। बाघ को पुचकारते समय राजा प्यार भरे अनेक शब्दों का प्रयोग करता था जो बाघ को अच्छे लगते थे। एक दिन बाघ से धीरे-धीरे बात करते समय उसने एक छोटी कैंची से उसकी थोड़ी-सी मूँछें काट लीं। बाघ को यह हरकत बिलकुल बुरी नहीं लगी!

राजा खुशी से नाचने लगा। वह तेजी से ऋषि के पास पहुँचा और बाघ की मूँछ उसे सुपुर्द कर दी। ऋषि ने सिर हिलाया, लेकिन यह देख कर राजा को आश्चर्य हुआ कि ऋषि ने उन मूँछों को चूल्हे में झोंक दिया।

"मेरे प्यारे राजा, अब तुम जान गये हो कि कैसे अपने बेटे को अनुशासित करना चाहिये, क्या ऐसा नहीं है? कोई भी मनुष्य का बच्चा बाघ से अधिक प्रचण्ड और खतरनाक नहीं हो सकता! अब, अपने बेटे को किसी शिक्षक को सुपुर्द करने से पूर्व स्वयं उसे वश में करो, उससे बातें करो, उसे कहानियाँ सुनाओ, उससे मित्रता करो जैसे तुमने बाघ को मित्र बना लिया और तब, उसे शिक्षक की सहायता लेने के लिए राजी करो। ठीक है न? जाओ और इसे आत्मविश्वास तथा दृढ़ निश्चय के साथ करो। उसी भावना से जिसके साथ तुमने बाघ की मूँछ लाने के कार्य को स्वीकार किया था। तुम सफल रहोगे," ऋषि बोले और हर रोज की तरह सैर के लिए बाहर निकल पड़े।

राजा महल में वापस लौट आया और अपने नव अर्जित ज्ञान को व्यवहार में लाने लगा। संक्षेप में, वह राजकुमार को अनुशासित करने में सफल हो गया। राजकुमार ने अपने पिता में एक स्नेहिल शुभचिन्तक देखा जो उसके मन की भावना को समझता था।

राजा ने राजकुमार में एक समझदार और ओजस्वी युवक देखा जो अपना सबक सीखने के लिए तैयार था।

"तो आखिर, पहले मुझे अपना सबक सीखना पड़ा, तभी मैं बच्चे को सबक सिखा सका", प्रसन्नचित्त राजा ने मंत्री को बताया जो उतना ही प्रसन्न था।

-एम.डी.

छल ही छल

हेलापुरी का निवासी माधव सामान्य परिवार का था। किन्तु उसकी पत्नी नीरजा चाहती थी कि सजी-धजी दिखूँ और ठाठ-बाट से रहूँ।

नीरजा के रिश्तेदारों के घर में होनेवाले विवाह के लिए उसे और माधव को न्योता मिला।

नीरजा के पास गले में पहनने योग्य सोने के आभूषण नहीं थे।

पड़ोसिन श्यामला के गले में चमकते हुए कंठहार को देखकर वह उसपर रीझ गयी। श्यामला ने वह हार उसे इस शर्त पर दिया कि लौटते ही वह उसे वापस कर देगी।

बडे ही आनंद के साथ नीरजा ने वह कंठहार अपने गले में डाल लिया और रिश्तेदारों के घर विवाह पर गयी। हफ्ता बीत चुकने के बाद भी नीरजा ने, श्यामला को वह कंठहार नहीं लौटाया। श्यामला ने भी माँगा नहीं।

दस दिनों के बाद क्रोध-भरा मुख लिये वह श्यामला के घर गयी और कंठहार को उसके हाथ में थमाते हुए कहा, ''मैंने कभी सोचा तक नहीं था कि दुनिया में इतने बड़े धोखेबाज़ होते हैं। सोने का कंठहार कहती हुई, तुमने नक़ली हार दे दिया।'' उसकी आवाज़ में कर्कशता थी।

फिर भी, श्यामला ने शांत स्वर में कहा, ''मैंने तुमसे थोड़े ही कहा था कि कंठहार सोने का है। तुम चाहती थी, बस, मैंने दे दिया। तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि कंठहार सोने का नहीं बल्कि नक़ली है?''

इसपर नीरजा ने क्रोध-भरे स्वर में कहा, ''थोड़ी रकम की ज़रूरत आ पड़ी। गिरवी रखने साहूकार के पास चली गयी। उसने पत्थर पर रगड़कर बताया कि यह हार नकली है।''

यह जवाब सुनकर श्यामला स्तब्ध रह गयी। *-मृदुला सावंत*

समाचार झलक

लम्बा, बलशाली

पंजाब के मनोज कुमार चोपड़ा (२५), जो अब बंगलोर में बस गये हैं, विश्व के सबसे बलशाली व्यक्ति बनना चाह रहे हैं। उनकी ऊँचाई ६ फुट ५ इंच है। सन २००२ में उन्होंने भारत के सबसे बलशाली व्यक्ति की उपाधि अर्जित की। सन २००४ में उन्हें 'स्ट्रॉंगेस्ट इन एशिया' की उपाधि मिली। अब उनका लक्ष्य विश्व रिकॉर्ड पर है। उनकी उपलब्धियों में शामिल हैं- सबसे मोटी टेलिफोन डायरेक्टरी की चीरफाड़, धातु के नम्बर प्लेट्स की चीरफाड़, धातु के कड़ाहों को टेढ़ामेढ़ा करना और हॉट वाटर बॉटल्स को बैलून की तरह फूंक कर फाड़ देना। अपने विस्मयकारी प्रदर्शन के अन्त में वह बच्चों को अपने 'मोटे' नोट बुक्स को फाड़ने के विरुद्ध सावधान कर देते हैं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वह बच्चों को बैलून बाँट कर उन्हें अपनी उपस्थिति में फुलाने को कहते हैं। उन्हें यह देख कर आश्चर्य होता है कि बैलून जानवरों, पक्षियों और आदमियों के कार्टून की आकृतियों में बदल जाते हैं।

सबसे अधिक घनी आबादी

फरवरी में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के अनुसार विश्व के दस सबसे घनी आबादी के नगरों में तीन भारत में हैं। वे हैं - मुम्बई (१.८३ करोड़), दिल्ली (१.५३ करोड़) तथा कोलकाता (१.४३ करोड़)। तीन करोड़ ५३ लाख की आबादी का नगर टोकियो विश्व का सबसे घनी आबादी का शहर है। इसके बाद मेक्सिको (१.९२ करोड़) तथा न्यू यार्क (१.८५ करोड़) का स्थान आता है। इसके बाद मुम्बई है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि विश्व की ६५० करोड़ की आबादी का लगभग आधा भाग नगरों में रहता है। सन २००७ तक इस संख्या के ५०० करोड़ तक पहुँच जाने की आशा की जाती है!

THE ADVENTURES OF G-man

एंड्रोमैनिया

काली परछाइयां भाग 2

प्रस्तुतकर्ता

अब तक की कहानीः टैरोलीन से युद्ध करने में मदद करने के लिए दूसरे ग्रह के जी-मैन की तलाश करते-करते इस जी-मैन की मुलाक़ात होती है 'दुष्ट' जी-मैन यानी ऐंटी-जी से।

हीऽ हीऽ हीऽऽ जी-मैन थोड़ा और क़रीब।

सबसे पहले मैं तुम्हें अपने बारे में बताना चाहूंगा। मैं टैरोलीन का जुड़वा भाई हूं। जब ऐंटी-जी ने मेरे भाई को मारा था तब उसे मेरी भनक भी नहीं लगी थी।

मैं वहां से बच निकला

हमेशा की तरह

पहले मैं टैरोलीन के शरीर में था, पर अब आज़ाद हूं।

अपने भाई से कहीं ज़्यादा ताक़तवर और बलशाली। मेरे साइज़ को देख धोखा मत खा जाना...

जी-मैन
मुझसे होशियारी
करने की कोशिश
मत करना।

ये रहा तुम्हारा
मुंहतोड़ जवाब!

चुपचाप खिसक
लो। फटे में टांग
मत डालो। ये
हमारी लड़ाई है।
आहऽऽऽ! मेरी तो कमर
ही टूट गई। ऐसा ही वार तुम
ऐंटी-जी पे क्यों नहीं करते।

ऐंटी-जी ये आपस की बात है। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।

जाहिर है... अगर मुझसे अकेले लड़ोगे तो मदद की ज़रूरत तो पड़ेगी ही।

चलो पहले बात ख़त्म करते हैं...
ओके, मुक़ाबला हो जाए। यदि तुम हारे, तो जो मैं बोलूंगा वो तुम करोगे। ये वादा रहा।

और यदि
तुम जीते,
तो तुम जो
बोलो मैं करूंगा।

अरे वाह!
मुक़ाबला!!

शर्त मंज़ूर है। तो फिर मेरा हुकुम सुनने को तैयार हो जाओ...

वो थक गया है। लगता है उसे थोड़ी ट्रेनिंग की ज़रूरत है।

वो तो अपना जी-शिल्ड भी ठीक से इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है।

उसे हराने में ज़्यादा देर नहीं लगेगी। चलो शुभ काम में देर कैसी?

क्या ये दिनभर के लिए काफ़ी नहीं होगा ऐंटी-जी?

आहSSS... चलो मैं हारा, अब बोलो मुझे क्या करना होगा? तुम्हारे तलवे चाटूं?

मैं तो दुबारा कोशिश करूंगा ही... आख़िर निलन जो ठहरा।
अ...हां... चलो ठीक है... अब थोड़ा काम की बात हो जाए। मेरा प्लान ध्यान से सुनो...

हुंSSS... प्लान तो बढ़िया है... बहुत ही बढ़िया। पर क्या ये कामयाब हो पाएगा। मुझे भी एक बार फिर वैसे ही लड़ना होगा जैसे टैरोलीन के साथ लड़ा था। पर उसके बिना ये लड़ाई कितनी बोरिंग होगी। वैसे मैं तुम्हारे साथ हूं।
इसके अलावा मेरे पास कोई चारा भी नहीं। वैसे इस गुस्ताखी के लिए मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा।
धन्यवाद!

तो कब से काम पे लगना है?

1. जी-मैन इस दुनिया से दूसरी दुनिया में क्यों जाता है?
   क. टैरोलीन से युद्ध करने में दूसरे जी-मैन की मदद मांगने के लिए.
   ख. पिकनिक मनाने के लिए.
   ग. टैरोलीन से बचने के लिए.

2. जी-मैन जिस पहली दुनिया में पहुंचता है वहां के लोग इतने दुखी क्यों थे?
   क. क्योंकि टैरोलीन उन्हें टीवी देखने नहीं देता था.
   ख. क्योंकि टैरोलीन उनसे दिनभर काम करवाता था.
   ग. क्योंकि उनकी दुनिया का जी-मैन गायब हो गया था.

3. दूसरी दुनिया में जी-मैन की मुलाक़ात किससे होती है?
   क. ग्लुग्गा-पानी के राक्षस से.
   ख. ऐंटी-जी से.
   ग. न्यूराल-माइंड रेडर से.

4. दूसरी दुनिया का विलेन जी-मैन को क्यों नहीं मार सका?
   क. क्योंकि उसके अंदर की अच्छाई मरने के साथ ही उसकी आधी शक्ति भी खत्म हो गई थी.
   ख. कई दिनों से खाना न खाने के कारण वो बहुत कमज़ोर हो गया था.
   ग. क्योंकि टैरोलीन ने जी-मैन को मारने से मना किया था.

5. दूसरी दुनिया का विलेन किसके लिए काम करता है?
   क. टैरोलीन का दुष्ट जुड़वा भाई.
   ख. टैरोलीन.
   ग. उस दुनिया के लोग.

1-क, 2-ग, 3-ख, 4-क, 5-क

सुपर हीरोज़ के लिए पावर सप्लाय

Visit: www.parleproducts.com

टी-टावर तक पहुँचने और टेरोलीन से लड़ने में जी-मैन की मदद कीजिए.

मुझमें भरिए रंग, मस्ती के संग.

तमिलनाडु की एक लोक कथा

लालची भठियारा

यह मदुराई की घटना है। पांडयन-शासकों के समय यह एक समृद्ध नगर था। चामी एक मेहतर था। उसे अपना काम शुरू करने के लिए बहुत सबेरे उठना पड़ता था। राजा घोड़े पर सवार होकर पूजा के लिए मन्दिर जाया करता था। इसलिए मार्ग को साफ-सुथरा रखना पड़ता था। राजा दो घोड़ों के सुनहले रथ पर जाता था। दो घुड़सवार अंगरक्षक राजा की सवारी निकलने से पहले आकर मार्ग का मुआयना करते थे। इसलिए उसे अपना काम परिश्रमपूर्वक करना पड़ता था।

उस दिन जब अंगरक्षक उसके आगे से निकले, उसने उन्हें ध्यान से देखा। वे कीमती लाल ज़री की पोशाक और बैंगनी रंग की रेशमी पगड़ी पहने थे। राजा का अंगरक्षक होना कैसा लगता होगा! उसके मन में सोचा।

चामी ने शीघ्र ही अपना काम पूरा कर लिया और घर वापस चला गया। चामी ने जल्दी-जल्दी आंगन के कुएं पर स्नान लिया। नहा-धोकर जैसे ही वह चारपाई पर बैठा कि उसकी पत्नी एक गिलास ताजा दूध ले आई।

''तुम क्या जानती हो मीना, मैंने इतने ख़ूबसूरत घोड़े कभी नहीं देखे। उन पर सवारी करना, आह! कितना अच्छा लगता होगा।''

उसकी आँखों में देखते हुए चामी ने कहा।

''तुम्हारा तात्पर्य अंगरक्षकों के घोड़ों से है?'' मीनाक्षी ने पूछा, ''फिर भी, तुम तो इतने डरते हो कि उन पर सवारी नहीं कर पाओगे!'' वह गिलास उठा कर अन्दर चली गई।

चामी रसोई घर तक उसके पीछे-पीछे गया। ''मैं नहीं डरूँगा और यह मैं एक दिन साबित

करके तुम्हें दिखा दूँगा'', उसने कहा मानों वह चुनौती दे रहा हो।

मीनाक्षी शायद चिढ़-सी गई। ''हमलोगों के अगले निवाले का तो ठिकाना नहीं है और चले हैं घुड़सवारी का सपना देखने। बारिश के पहले घर पर नया छप्पर डालना पड़ेगा। तुम पहाड़ों पर जाकर घर की मरम्मत भर धन के लिए प्रार्थना क्यों नहीं करते? मुझे अब ज़मीन्दार के घर जाना है। आज उसके पोते का जन्मदिन है। शायद कुछ ज्यादा पैसे मिलें और अधिक भोजन भी जो दोनों के लिए काफी हो।''

''यदि तुम ऐसा कहती हो, मीनाक्षी, तो मैं

पहाड़ों पर जाऊँगा,'' चामी ने नम्रता के साथ कहा, ''और तुम कुछ खाना लाने की कोशिश करो। मैं तब तक लौट आऊँगा।''

''उसे मेरी बातों पर यकीन नहीं है, लेकिन कुछ भी हो जाये, मैं पहाड़ों पर जाऊँगा, चाहे वहाँ कोई देवता हो या न हो'', वह तेज़ी से चलते-चलते धीरे से बोला।

वह एक बार पीछे मुड़ा; उसकी पत्नी के बाहर निकलते और दूसरी दिशा में जाते समय उसकी साड़ी के एक किनारे पर उसकी नजर पड़ी। उसने घर की दीवार से लगे लम्बे हत्थे वाला अपना झाड़ू भी देखा। उसने इसे स्मरण दिलाया, राजा के मार्ग की सफाई के लिए अगली सुबह तक उसे लौट आना होगा।

चामी तेज़ी से चलने लगा और शीघ्र ही उसे सामने काले पहाड़ दिखाई पड़े। पादगिरि पहुँच कर दुरारोही चट्टानों के ढाल पर वह चढ़ने लगा। कुछ ऊँचाई तक जाने पर चामी ने एक गुफा देखी, जहाँ उसने कुछ देर आराम करने का निश्चय किया। अपनी पगड़ी को सिरहाने रख कर वह लेट गया और तुरन्त उसे नीन्द आ गई।

''चामी, उठो!'' उसने सोचा कि वह सपना देख रहा है। लेकिन नहीं, उसने सचमुच महसूस किया कि कोई उसे जगा रहा है। उसने झकझोर को अनुभव किया। वह उठ बैठा। आँखें मल कर उसने चारों ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था।

आवाज़ फिर आई। ''चामी! तुम पर्वतों के देवता से मिलने के लिए यहाँ आये। मैं मलयवनन

हूँ। तुम्हें अपने पीछे एक शंख मिलेगा। जब भी तुम इसे बजाओ, मन में कोई इच्छा रख लो–भोजन, धन, नया छप्पर, घोड़े....जो भी अभिलाषा करोगे, तुम्हें प्राप्त हो जायेगा।''

चामी खड़ा हो गया और पीछे मुड़ कर देखा। गुफा के फर्श पर एक चमकता हुआ श्वेत शंख था। उसने उसे उठाकर अपनी पगड़ी के एक किनारे से बाँध लिया और घर की ओर चल पड़ा। सूर्यास्त होनेवाला था। शीघ्र ही अन्धेरा इतना बढ़ गया कि रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था। वह सावधानी से आगे बढ़ता गया।

आखिर उसे एक रोशनी दिखाई पड़ी। वह मार्ग के किनारे एक सराय थी। उसने वहीं रात बिताने का निश्चय किया। सराय के मालिक ने उसे एक कमरा दिखा दिया और वह अतिथि के लिए भोजन लाने चला गया। क्या उसने शंख बजने की ध्वनि सुनी? कौन हो सकता है? और यह ध्वनि आई कहाँ से?

भठियारा खाना लाकर जब अतिथि को परोस रहा था, तब यों ही पूछ बैठा, ''संयोग से, क्या आपने ही शंख बजाया था?''

''हाँ, मैंने ही बजाया था'', चामी ने कहा। उसने देखा कि भठियारा चारों ओर ताक-झांक कर रहा है। उसने भठियारे को शंख दिखा दिया और शंख के बारे में सब कुछ बता दिया। उसने कहा कि अभी उसने कमरे का किराया और भोजन की कीमत के पैसे मांगने के लिए शंख बजाया था।
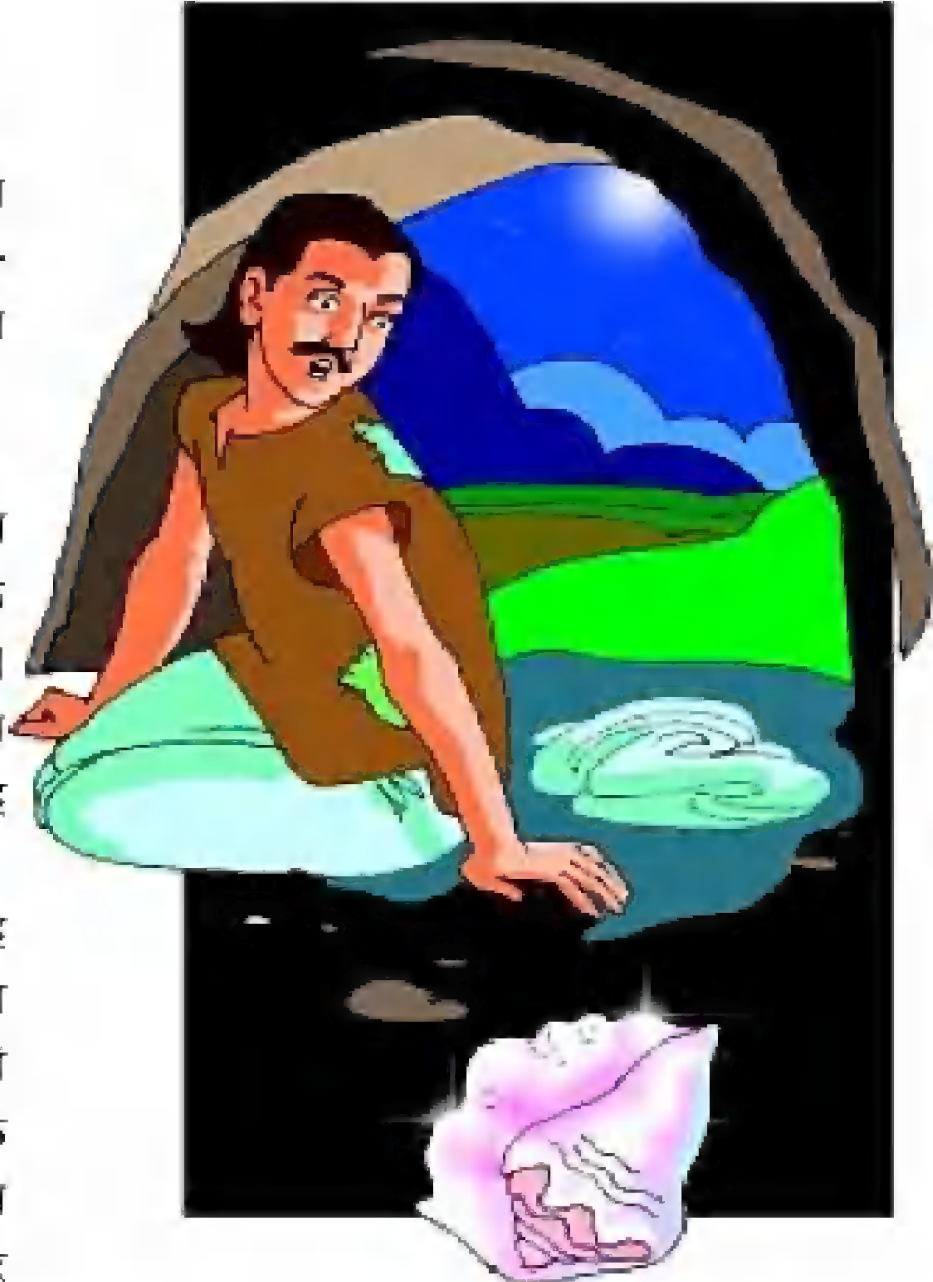
भठियारा लालची इनसान था। चामी के सो जाने पर वह चुपचाप उसके कमरे में घुसा और पगड़ी खोल कर जादू का शंख निकाल उसमें उसी आकार का सामान्य शंख बाँध दिया। सुबह में जब चामी कमरे और खाने का पैसा देने लगा तब भठियारे ने उसके हाथ पकड़ कर कहा, ''आप जैसे व्यक्ति से मिल कर मैं धन्य हो गया हूँ। मैं आप को अपना अतिथि मानता हूँ। जब भी आप इधर से गुजरें तो मेरा आतिथ्य स्वीकार करने की कृपा अवश्य करें।''

चामी उसे धन्यवाद देकर जल्दी ही घर लौट

आया। रास्ते में उसने सोचा, "मैं अब मेहतर का काम क्यों करूँ। अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार हर चीज़ का आनन्द ले सकता हूँ।"

मीनाक्षी ने मुस्कुराते हुए पति का स्वागत किया। और उसे ताजे दूध का गिलास देते हुए कहा, "तो भेंट हो गई पर्वत के देवता से?"

"तुम अपने पति को क्या समझती हो?" इस भूमिका के साथ उसने अपनी दास्तान शुरू की,और पगड़ी खोल कर शंख निकाला।

मीनाक्षी खुशी से उछल पड़ी। "मुझे देखने दो! मुझे आजमाने दो।" शंख को अपने हाथ में लेकर उसने सत्य भाव से कहा, "हे जादू के शंख! क्या आप सोने का एक सिक्का देंगे?" उसने शंख बजाया, किन्तु कुछ फल नहीं निकला।

"इसने मुझे कुछ नहीं दिया", मीनाक्षी ने कहा। "तुम कोशिश करो!" उसने चामी को शंख लौटा दिया। चामी ने बिना किसी चीज़ की इच्छा किये शंख को फूँका। पर कोई आवाज़ नहीं आई। उसने कई प्रकार से बजाने की कोशिश की। फिर भी आवाज़ नहीं आई।

"लेकिन पिछली रात उसने ठीक काम किया और चाँदी के दस सिक्के दिये। भठियारे ने सिक्के नहीं लिये, इसलिए दस के दस सिक्के ये पड़े हैं।" उसने सिक्कों को गिना- एक, दो, तीन....

"क्या तुम निश्चयपूर्वक कह सकते हो कि इसी शंख को तुमने बजाया था? ध्यान से देखो। मुझे सन्देह है कि भठियारे ने तुम्हें धोखा दिया है। उसने निश्चय ही जादू का शंख लेकर दूसरा शंख रख दिया है।" मीनाक्षी ने कहा।

चामी ने शंख पर नज़र दौड़ाई। "अब क्योंकि तुमने सन्देह व्यक्त किया है, मुझे भी लगता है कि यह जादू का शंख नहीं है। वह बहुत श्वेत था। यह गन्दा दिखाई देता है।"

"तुम एक काम करो।" मीनाक्षी ने कहा, "अभी अपने काम पर चले जाओ और शाम को सराय में एक कमरा ले लो। बातचीत के सिलसिले में सराय के मालिक से कहो कि यह शंख किसी महात्मा ने आशीर्वाद के रूप में दिया है। अब यह चाँदी की बजाय सोने के सिक्के देगा। फिर तुम गौर से देखना, वह क्या करता है।"

चामी जल्दी-जल्दी मार्ग की सफाई करने

चला गया। फिर घर लौट कर कुछ देर आराम करने के बाद सराय जाने के लिए रवाना हो गया।

सराय के मालिक को आश्चर्य हुआ। खाना खाते समय सराय के मालिक के साथ गप्प करते हुए चामी ने बताया कि एक योगी से प्रसाद के रूप में उसे एक शंख मिला है। शंख पगड़ी के एक सिरे से बँधा हुआ था जिस पर भठियारा बार-बार नज़र डाल रहा था। ''मैं थक गया हूँ, इसलिए जल्दी ही सो जाऊँगा'', चामी भठियारे को सुनाते हुए बोला।

चामी ने आँखें बन्द कर सो जाने का बहाना किया। वह सावधान था। तभी भठियारे ने चोरी से कमरे में घुस कर पगड़ी खोली और शंख बदल दिया।

जादू का शंख वापस आ जाने पर वह भोर तक सोया रहा। उसने भठियारे को जगाया पर उसने पैसे लेने से फिर इनकार कर दिया।

चामी घर लौट आया और अगले कुछ ही दिनों में उसकी और मीनाक्षी की सभी इच्छाएँ पूरी हो गईं- नया छप्पर और अंगरक्षक की नौकरी।

इधर सराय के मालिक ने अपने आप को इस बात के लिए ख़ूब कोसा कि सोने के सिक्के के लालच में पड़ कर उसने जादू का शंख गंवा दिया और चाँदी के सिक्कों को इनकार कर दो-दो बार मूर्खता कर दी। योगी और जादू के शंख की कोई और कहानी लेकर अब शायद वह कभी नहीं आयेगा।

लेकिन चामी फिर एक बार सराय पर गया, इस बार एक ख़ूबसूरत काले घोड़े पर सवार होकर। वह एक कीमती लाल वर्दी की पोशाक में था। सराय का मालिक चकित रह गया। राजा का अंगरक्षक मेरी सराय का मेहमान?

''मैं सिर्फ यह जानने के लिए आया हूँ कि अब तक तुमने सोने के कितने सिक्के इकट्ठे कर

लिये!'' चामी ने उसकी हँसी उड़ाते हुए पूछा।

भठियारा ने अब आवाज़ पहचान ली, ''ओह! महानुभाव, तो आप हैं।'' वह सिर नीचे झुका कर बोला, ''मेहरबानी करके माफ कर दीजिये!''

चामी ने सिर्फ हाथ हिलाया और वह घोड़े पर सवार होकर चलता बना।

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

गोपाल का एक सम्बन्धी एक मानसिक रोग के अस्पताल में चिकित्सा करा रहा था। एक दिन, वह रोगी से मिलने गया। उसे स्वागत कक्ष में प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। शीघ्र ही एक व्यक्ति आकर उस बेंच के एक कोने पर बैठ गया जिस पर गोपाल बैठा था। कुछ मिनटों के बाद गोपाल उसके साथ बातचीत करने लगा, "क्या आप भी किसी रोगी से मिलने आये हैं?"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "मैं यहाँ पिछले चार महीनों से हूँ। मेरा सम्बन्धी यह कहकर मुझे यहाँ लाये कि मैं मानसिक रूप से असन्तुलित हूँ।"

गोपाल उसे सहज महसूस करने देना चाहता था। "लेकिन आप तो बिलकुल सामान्य लगते हैं।"

"मुझे लगता है कि यहाँ की चिकित्सा से मेरी अवस्था और बिगड़ गई है।" उस व्यक्ति ने करुण स्वर में कहा। "प्रसंगवश, आप की पसन्द क्या है? लकड़ी के सैन्डल्स् या चमड़े के स्लिपर्स?"

"बेशक, चमड़े के स्लिपर्स!" गोपाल ने कहा।

"बहुत अच्छा! आप कैसे पसन्द करेंगे, तला हुआ या उबाला हुआ?"

क्या यह कहानी तुम्हें उल्लासपूर्ण लगती है? तुम इसका अन्त कैसे करोगे? यदि कर सको तो इसे १००-१५० शब्दों में और प्रफुल्लता से भरपूर करो। एक उपयुक्त शीर्षक भी दो और निम्नलिखित कूपन के साथ एक लिफाफे में भेज दो जिस पर लिखा हो– 'पढ़ो और प्रतिक्रिया दो'।

अन्तिम तिथिः ३० सितम्बर २००५

नाम -- उम्र ------------ जन्मतिथि ------------------------

विद्यालय -- कक्षा ------------

घर का पता --

-- पिनकोड --------------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
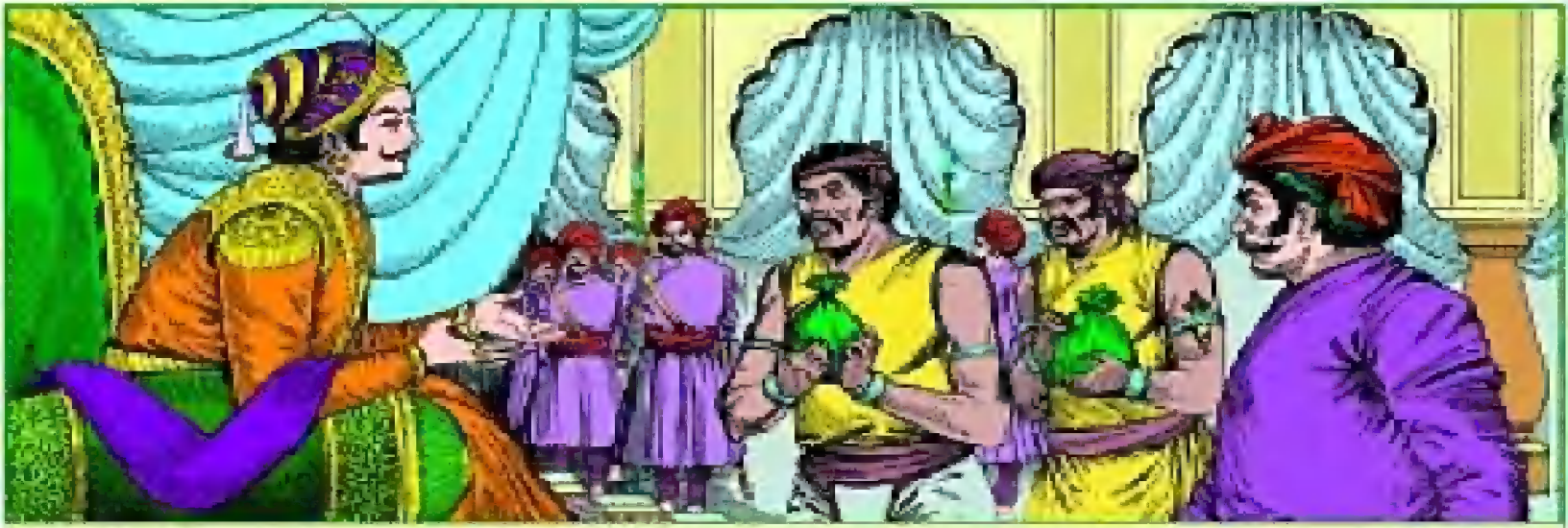
नीतिमान्

बोधिसत्व काशी के राजा ब्रह्मदत्त के पुत्र बनकर जन्मे। ब्रह्मदत्त ने उसका नाम रखा, शीलवान्।

शीलवान् ने क्रमशः राजोचित विद्याएँ सीखीं, धर्मशास्त्रों का गहरा अध्ययन किया और बड़े हो जाने पर काशी राज्य का राजा बना। वह प्रजा को अपनी संतान मानता था। उनसे वह बेहद प्यार करता था, उनका बड़ा ही आदर करता था। विशेषतया अपराधियों के प्रति वह दया दिखाता था और उनके जीवन को सुधारने की भरसक कोशिश करता था। दरिद्रता व अज्ञान के कारण जो चोरी करते थे, उन्हें वह कठोर दंड देना तो दूर उल्टे वह उन्हें अपने पास बुलाता था, जरूरत पड़ने पर धन देकर उनकी सहायता करता था और हितबोध करके उन्हें भेज देता था। इस वजह से उसके राज्य में अपराधों में कमी ही नहीं हुई बल्कि असीम भक्ति व एक-दूसरे के प्रति आदर की भावना भी बढ़ी।

कोसल देश काशी राज्य के निकट का देश था। उस देश के मंत्री को काशी राजा की अच्छाई उसकी कमज़ोरी लगी। उसे लगा कि काशी राज्य को जीतना बायें हाथ का खेल है। उसने अपने राजा से कहा, "काशी का राजा शीलवान् बड़ा ही दुर्बल है। वह लुटेरों और हत्यारों तक को दंड नहीं देता। ऐसे कायर को हम आसानी से जीत सकते हैं।"

कोसल राजा को पहले मंत्री की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। सच जानने के लिए उसने अपने चंद सैनिकों को बुलाया और उनसे कहा, "सरहदें पार करके तुम लोग काशी राज्य में प्रवेश करो। गाँवों को लूट लो।"

जब कोसल के सैनिकों ने काशी राज्य के गाँवों पर हमला किया तब वहाँ की जनता ने उनका सामना किया, उन्हें बंदी बनाया और राजा शीलवान् के पास ले गये।

"तुम बिदेशी लगते हो। हमारे गाँवों पर तुम लोगों ने हमला क्यों किया?" शीलवान् ने उनसे

पूछा। "महाराज, भूख के मारे हमें ऐसा करना पड़ा," कोसल सैनिकों ने कहा।

"इतने भूखे हो तो मुझसे माँग सकते थे," कहते हुए शीलवान् ने ख़ज़ाने से धन मँगाया और उन्हें देकर भेज दिया।

शीलवान् की इस व्यवहार शैली को देखकर कोसल राजा को आश्चर्य हुआ और साथ ही उसमें धैर्य भी जगा। एक और बार परीक्षा करने के उद्देश्य से उसने अधिक संख्या में सैनिकों को लूटने के लिए काशी राज्य भेजा। जब वे सरहदें पार कर रहे थे तब काशी राज्य की जनता ने उन्हें रोका और पकड़ लिया।

इस बार भी वे उन्हें काशी राजा के पास ले गये। परंतु राजा ने उन्हें सज़ा नहीं दी। थोड़ा-सा धन देकर भेज दिया। इससे कोसल राजा को पक्का विश्वास हो गया कि सचमुच ही काशी राजा दुर्बल है और उसपर विजय पाना आसान है। वह अपनी विशाल सेना को लेकर काशी राज्य पर हमला करने निकल पड़ा।

जैसे ही यह समाचार काशी राज्य के मंत्रियों और सेनाधिपतियों को गुप्तचरों के द्वारा मालूम हुआ, वे राजा शीलवान् के पास गये और कहा, "महाराज, लगता है कि कोसल के राजा हमारे बल से अपरिचित हैं। बड़े गर्व से वे हमपर हमला करने निकल पड़े। उनका सामना करने की आज्ञा दीजिये। हम उनके छक्के छुड़ा देंगे, पैर उखाड़ डालेंगे।"

शीलवान् युद्ध करने के पक्ष में नहीं था। उसने थोड़ी देर तक सोचने के बाद शांत स्वर में कहा, "अनावश्यक रक्त बहाना नहीं चाहिये। उन्हें अगर काशी राज्य ही चाहिये, तो इसे अपने अधीन कर लेने दीजिये। किले के द्वारों को खोल दीजिये।"

काशी राजा ने एक दूत के द्वारा कोसल राजा को संदेश भेजा। "शत्रु बनकर आने की कोई आवश्यकता नहीं है। मित्र बन कर आइये।"

कोसल राजा ने समझा कि यह शीलवान् की दुर्बलता है। विकट अट्टहास करते हुए अति उत्साह के साथ वह काशी राज्य में पहुँचा।

राज मर्यादा का उल्लंघन करते हुए वह सेना सहित काशी राजा की सभा में आया। प्रवेश करते ही उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे राजा व मंत्रियों को रस्सियों से बांध दें।

"अतिथियों का ऐसा व्यवहार उचित नहीं लगता," शीलवान् ने कहा।

इन बातों पर कोसल राजा ठठाकर हँस पड़ा। देखते-देखते सैनिकों ने शीलवान् और उनके मंत्रियों को बाँध कर उनके राज-चिह्न खींच डाले।

शीलवान् और उसके मंत्री शाम तक काशी नगर छोड़कर चले गये। वे अरण्य मार्ग से होते हुए जाने लगे। अंधेरा छा जाने के बाद वे सब के सब पेड़ों के तले लेट गये। उस रात को उन्होंने खाना भी नहीं खाया।

आधी रात को शोरगुल के कारण उनकी निद्रा भंग हो गई। उठकर देखा कि कई लुटेरे मशाल लिये वहाँ खड़े हैं। लुटेरों ने शीलवान् से कहा, ''महाराज, हम चोर हैं, लुटेरे हैं। आपकी दया के कारण हम अब तक चोरी किये बिना शांत जीवन बिताते आ रहे हैं। पर, अब से हमारी तकलीफ़ें शुरू हो गयीं। इसलिए हम इस रात को राजसौध में घुस गये और यह संपत्ति लूट ली। लीजिये, आपकी ये पोशाकें, राज-चिह्न और तलवारें। आपके लिए हम स्वादिष्ट खाना भी ले आये। पहले आप ये राजोचित वस्त्र पहन लीजिये, भोजन कीजिये और हमें आज्ञा दीजिये कि हम इस संपत्ति का क्या करें।''

शीलवान और मंत्रियों ने खाना खा लिया और अपनी पोशाकें पहन लीं। बाद में शीलवान् ने लुटेरों से कहा, ''तुम लोगों की समस्याओं का परिष्कार कैसे हो, नये राजा को यह जानना होगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि नये राजा तुम्हारे विषय में कोई अच्छा ही निर्णय लेंगे। इसके पहले ही तुमने

यह संपत्ति लूटकर अच्छा नहीं किया। यह पूरा धन ले जाओ, राजा को दो और उनसे पूछो कि तुम लोगों के विषय में वे क्या करनेवाले हैं।''

''वह राजा नहीं, लुटेरा है। आपको लूटा है। हम क़तई उसका विश्वास नहीं करते। महाराज, हम किसी भी हालत में उस नीच के पास नहीं जायेंगे। आप ही हमारे महाराज हैं, हमेशा रहेंगे।'' लुटेरों ने कहा।

प्रातःकाल ही अपने मंत्रियों सहित काशी राजा राज सभा में पहुँचा। शीलवान् को देखते ही कोसल राजा निश्चेष्ट रह गया।

शीलवान् ने जो हुआ विस्तारपूर्वक बताया और कहा, ''महाराज, आप चाहते हैं कि मुझ से भी अधिक, सक्षमतापूर्वक शासन चलायें, प्रजा के साथ इतोधिक न्याय करें, इसीलिए आपने मुझे राज्य से निकाल दिया, मेरे सिंहासन पर आसीन हो गये। बेचारे ये मासूम लुटेरे इस सत्य को जान नहीं पाये और रात को आपका ख़जाना लूट लिया। उन्हें यह भय भी हो गया कि आपके शासन में उनका कुशल संभव नहीं। मैंने उन्हें आश्वासन दिया है कि आप अवश्य ही उनकी समस्याओं का न्याय सम्मत परिष्कार करेंगे। उन्हें साथ लेकर आपकी संपत्ति आपके सुपुर्द करने यहाँ आया हूँ। भला, इस राज्य में इससे बढ़कर मेरा और क्या काम हो सकता है!''

शीलवान् की बातें सुनकर कोसल राजा के हृदय में परिवर्तन हुआ। वह सिंहासन से तुरंत नीचे उतर आया और शीलवान् के पैरों पर गिरकर कहा, ''महात्मा, आप महान हैं। लुटेरे भी आपको चाहते हैं। इससे बढ़कर क्या और सबूत चाहिये कि आप साधारण मानव नहीं, असाधारण व्यक्ति-विशेष हैं। मुझसे पाप हो गया। क्षमा कीजिये। इस नीच मंत्री की सलाह ने मुझे गुमराह कर दिया। आप अपना राज्य ले लीजिये। आप जैसे महान के शासन में ही प्रजा सुखी रहेगी, न्याय होगा। मुझे बस, आपकी मैत्री चाहिये, राज्य नहीं।''

शीलवान् पुनः काशी का शासक बना। उसने कोसल राजा का सम्मान किया और आदरपूर्वक उसे उसके राज्य में भेज दिया।

विष्णु पुराण

महामुनि सूत ने दशावतारों में से नौवें अवतार बुद्ध के बारे में सुनाना शुरू किया।

यह कलियुग के विस्तार का समय था। मानवता से क्रूर पशुत्व की दशा में परिवर्तित होने का समय था। इस कारण मानव को अपने विवेक को सही रास्ते पर लगा कर अपना उद्धार करने की आवश्यकता आ पड़ी।

सारे मानव राक्षस बनकर एक दूसरे को लूटते, सताते, यज्ञ-याग के नाम पर बलि दे हिंसा को अपना लक्ष्य बनाकर, मदिरा मांस का सेवन करते हुए भोगी-विलासी बनकर अज्ञान में पड़ गए और यह सत्य समझ न पाये कि मानव बुद्धि जीवी है।

पूर्ण मानव के रूप में किसी देवांश से दूर बुद्ध के नाम से जन्म धारण करके विष्णु को मानवों का उद्धार करने के लिए युग के अनुरूप धर्म की स्थापना करनी पड़ी। नेपाल देश के कपिलवस्तु नगर में राजा शुद्धोदन राज्य करते थे। उनकी पत्नी मायादेवी ने एक सपना देखा, पूर्णिमा के चंद्र बिम्ब की भांति प्रकाशमान हो एक श्वेत हाथी आसमान से उतर कर उसके भीतर प्रवेश कर गया। सपने की बात ज्योतिषियों को बताई गई। ज्योतिषियों ने उस सपने का अर्थ महाराजा से बताया कि एक महापुरुष महारानी के गर्भ से पैदा होनेवाले हैं।

चन्द दिनों के बाद मायादेवी ने अपने मायके जाते हुए एक उद्यान में एक शिशु को जन्म दिया। वह वैशाख पूर्णिमा का दिन था।

सारे राज्य में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। परन्तु यह प्रसन्नता स्थायी न रह सकी। उस पर काली घटा छा गई। पुत्र के जन्म के बाद मायादेवी
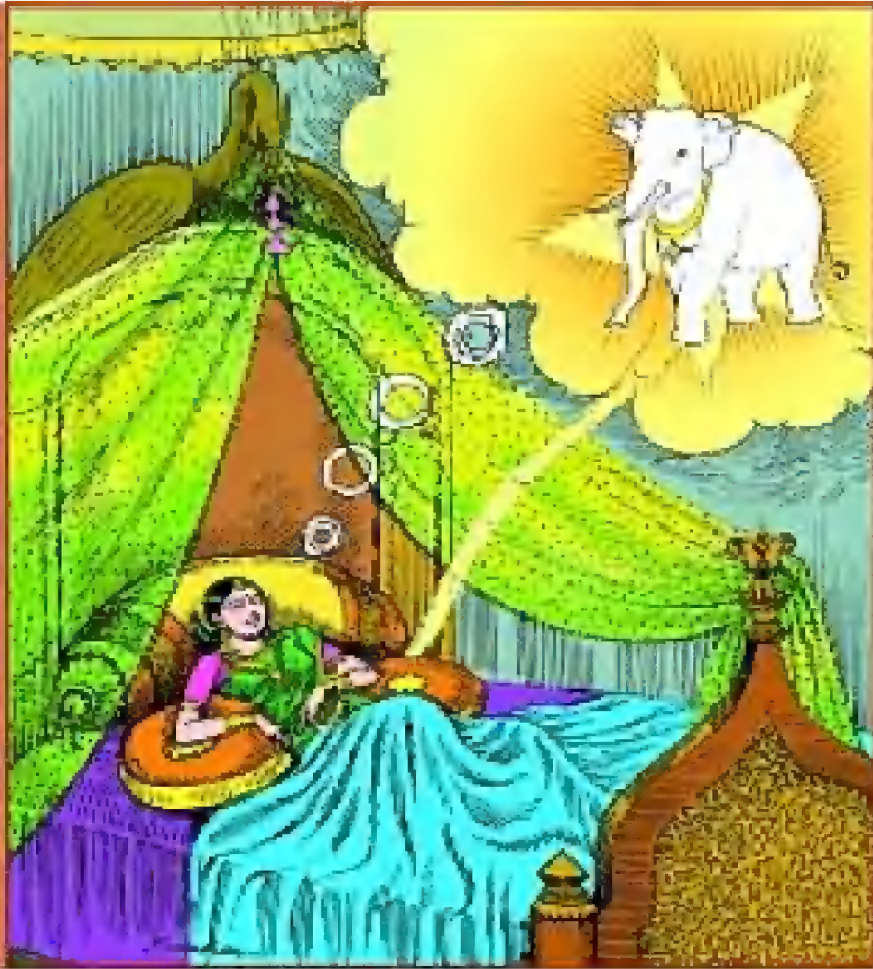
अधिक दिनों तक जीवित नहीं रही। इस प्रकार उन्होंने शुद्धोदन को दुःख में डुबो कर अपनी इहलीला समाप्त कर ली।

मातृप्रेम से वंचित उस बालक को अपनी आँख की पुतली की भांति देखभाल करते हुए शुद्धोदन ने उसका नामकरणोत्सव मनाया। बालक का नाम गौतम सिद्धार्थ रखा गया।

इसके बाद ज्योतिषियों ने राजकुमार की जन्म कुण्डली की जांच की। उन लोगों ने बताया, "महाराज, राजकुमार चक्रवर्ती बन जाएगा। समस्त विश्व के राजा, महाराजा तथा प्रजा इसके सामने सर नवाकर अपनी श्रद्धा प्रकट करेंगे।" शुद्धोदन के आनन्द की सीमा न रही।

"....पर महाराज, राजकुमार के संन्यासी बन जाने की भी संभावना है।"

शुद्धोदन का कलेजा कांप उठा। उन्होंने ज्योतिषियों से पूछा, "एक ओर आप लोग बालक के चक्रवर्ती बन जाने की बात कर रहे हैं और फिर संन्यासी बन जाने की संभावना भी बताते हैं। यह परस्पर विरोधी बात कैसी?"

ज्योतिषियों ने पुनः राजकुमार की जन्मपत्री का सूक्ष्म परिशीलन किया और निवेदन किया, "महाप्रभु! राजकुमार अत्यन्त कोमल हृदय वाला है। उसको चार दृश्यों को नहीं देखना चाहिए। वे चारों दृश्य हैं - रोग, वृद्धावस्था, मृत्यु और संन्यास। ये दृश्य राजकुमार के जीवन में तूफ़ान ला देंगे। इन दृश्यों को देख तत्काल राजकुमार का मन विचलित हो जाएगा।"

सिद्धार्थ को बचपन से ही सब प्रकार की चिंताओं से दूर रख कर सदा मनोरंजन के कार्य क्रमों का प्रबन्ध किया गया। इस प्रकार शुद्धोदन ने अपनी तरफ़ से पूरी सावधानी बरती।

सिद्धार्थ एक दिन उद्यान में आसन पर बैठा हुआ था। एक हंस छटपटा कर तड़पते हुए उनकी गोद में आ गिरा। राजकुमार ने उसके शरीर में धंसे बाण को सावधानी से निकाला और पत्तों का रस निचोड़ कर उस के प्राण बचाये।

"यह हंस मेरा है। इसको मैंने बाण से मार गिराया है।" यों जोर से चिल्लाते हुए देवदत्त सिद्धार्थ के समीप आया।

देवदत्त सिद्धार्थ का रिश्ते का भाई था। "इस हंस के प्राण मैंने बचाये हैं। इसलिए इस पर मेरा अधिकार है।" सिद्धार्थ ने कहा। इस बात को

लेकर दोनों के बीच वाद-विवाद हुआ। आखिर इसका निर्णय करने के लिए दोनों राजसभा में पहुँचे। धर्मशास्त्रियों ने एकमत हो यह फैसला सुनाया, "हंस के प्राण बचाने वाले सिद्धार्थ का ही इस पक्षी पर अधिकार है।"

तब से ही सिद्धार्थ के प्रति देवदत्त के मन में ईर्ष्या की भावना पैदा हो गई।

शाक्य सुक्षत्रिय आयुधोप जीवी हैं। शिकार खेलना उनके लिए अत्यन्त प्रिय कार्य है। पर राजकुमार सिद्धार्थ शिकार खेलने में रुचि नहीं रखता था। अस्त्र-विद्या व लक्ष्य साधना में कौशल प्राप्त कर उन्होंने अपार यश प्राप्त कर लिया था। फिर भी उन्हें जानवरों का वध करना और उनको सताना कदापि पसन्द न था।

सिद्धार्थ शिकार खेलने नहीं जाता था, मनोरंजन के कार्यक्रमों में भाग नहीं लेता था। किसी प्राणी को दुःख भोगते देख उसका दिल तड़प उठता था। हिंसा को सहन नहीं कर पाता था। ये सब देख कर शुद्धोदन सोचने लगे कि राजुकमार की धमनियों में खून के बदले क्या करुणा बहती है। यों विचार कर अन्य राजकुमारों तथा युवराजों की भांति सिद्धार्थ को तैयार करने के उन्होंने अनेक प्रकार से प्रयत्न किये। उनके मनोरंजन के लिए अनेक प्रकार के उपाय किये गये, जिससे उसे कुछ भी गंभीर बात को सोचने का समय न मिले।

राजकुमार जब भी नगर में जाता, तब रथ का सारथी चेला इस बात की सावधानी बरतता कि

रास्ते में कहीं रोगी, वृद्ध, शव, परिव्राजक संन्यासी राजकुमार की आँखों में न पड़े।

सिद्धार्थ जब वयस्क हुए, तब उनके भीतर सत्यप्रियता, तार्किक दृष्टि तथा हेतुवाद की भावना विकसित हुई। देखने में वे ऐसे सुन्दर थे, मानो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आए हुए कोई देव कुमार हों। पर मनोरंजन तथा राजभोगों के प्रति उनका मन आकृष्ट नहीं होता था। राजकुमार का व्यवहार देख राजा शुद्धोदन अत्यन्त व्याकुल हो उठे। सिद्धार्थ अब विवाह के योग्य बन चुके थे। उन्होंने सोचा कि शायद विवाह हो जाने पर सिद्धार्थ का मन सांसारिक बन्धनों में रम जाए। इस विचार से उन्होंने सारे राज्य की क्षत्रिय वंशी सभी सुन्दर कन्याओं को निमंत्रित कर बुलवाया।

राजकुमार को अपनी ओर आकृष्ट करने के

लिए अंतः पुर की नृत्यशाला में कुछ कन्याओं के नृत्य एवं संगीत का आयोजन किया गया। उन कन्याओं का उचित उपहारों के साथ सत्कार करने के लिए थालियों में मोतियों के हार, स्वर्ण-भूषण सजाकर रखे गये थे।

कई रमणियाँ अपने कार्यक्रम समाप्त कर तिरछी नज़र से सिद्धार्थ को देखते हुए उनसे पुरस्कार प्राप्त करके लौट रही थीं।

अन्त में सिद्धार्थ अपने आसन से उठ कर चले जा रहे थे। तब उनकी दृष्टि एक स्तम्भ की ओट में खड़ी हुई सुन्दर रमणी पर पड़ी। उसके भीतर से कोई अद्भुत सौन्दर्य फूट रहा था। उसके शान्त वदन पर दिव्यता दमक रही थी। वह एक सामन्त की पुत्री यशोधरा थी।

सिद्धार्थ उसकी ओर तुरन्त आकृष्ट हो गए। धीरे-धीरे चलकर वे उसके पास आए पर उस कन्या को देने के लिए थालों में एक भी चीज़ बची न थी। इसपर सिद्धार्थ ने अपना कंठहार निकाल कर यशोधरा को भेंट कर दिया।

उसी क्षण यशोधरा के प्रति सिद्धार्थ के मन में अनुराग पैदा हुआ। यह बात महाराजा को मालूम हो गई। वे बहुत खुश हुए और यशोधरा के पिता, जो एक सामन्त राजा थे, के पास महाराजा शुद्धोदन ने समाचार भेजा कि वे उनकी बेटी के साथ सिद्धार्थ का विवाह करने के लिए तैयार हैं।

देवदत्त ने हठ किया कि यशोधरा के विवाह के लिए स्वयंवर की घोषणा करें और शौर्य तथा पराक्रम की परीक्षा करने के लिए प्रतियोगिताओं का प्रबन्ध करें। इस पर यशोधरा के पिता ने स्वयंवर की प्रतियोगिताओं के निमंत्रण पत्र सब के पास भेज दिये।

हिंसा से दूर अनेक प्रतियोगिताओं के प्रदर्शन का प्रबन्ध किया गया। असंख्य युवक उन प्रतियोगिताओं में भाग लेने आ पहुँचे। उन सभी प्रतियोगिताओं में सिद्धार्थ प्रथम आये। उनके साथ अंतिम प्रतियोगिता तक केवल देवदत्त ने प्रतिद्वन्द्वी बनकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। अंतिम प्रतियोगिता घुड़सवारी तथा बाण विद्याओं में सिद्धार्थ ने अपनी अपूर्व क्षमता का परिचय देकर यशोधरा का पाणिग्रहण किया। इसके बाद यशोधरा तथा सिद्धार्थ का विवाह वैभवपूर्ण सम्पन्न हुआ।

महाराजा शुद्धोदन को अपार मानसिक शान्ति

मिली। वे यह सोच कर फूले न समाये कि उनका पुत्र एक गृहस्थ बन गया है और संसार के माया-जाल में फंस कर वह आखिर चक्रवर्ती बनेगा।

यशोधरा सब प्रकार से सिद्धार्थ के अनुकूल व्यवहार करने लगी। उसने समझ लिया कि उसके पति के अन्दर मानव के मूल्यों के लिए प्रथम स्थान प्राप्त है। इस कारण वह भी सिद्धार्थ के विचारों के अनुकूल अपने को ढालने लगी। विवाह के बाद सिद्धार्थ ने अंतः पुर को छोड़कर बाहर आना-जाना बन्द कर दिया।

कुछ दिन बाद उस दम्पति के एक पुत्र हुआ जिसका नामकरण राहुल किया गया। राहुल अपने माता-पिता तथा दादा की देखभाल में बड़े ही लाड़-प्यार में पलने लगा।

एक दिन सिद्धार्थ ने रथपर सवार होकर अपने सारथी चेन्ना को नगर-दर्शन के लिए ले जाने का आदेश दिया। पहले सारथी के मन में संदेह पैदा हुआ, पर वह सिद्धार्थ के दृढ़ संकल्प से परिचित था, इस कारण से वह युवराज के आदेश का पालन करने से इन्कार न कर सका।

रथ कपिलवस्तु के राजपथ पर आगे बढ़ रहा था। एक स्थान पर सामने से बुढ़ापे के भार से झुका एक आदमी गिरते-उठते हुए आ निकला। उसकी हालत दयनीय थी। उस के प्रति कोई व्यक्ति सहानुभूति नहीं दिखा रहा था।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर भयंकर बीमारी का शिकार बना एक रोगी सामने से आ गुजरा। देखने में वह दरिद्र लग रहा था।

इसके बाद कुछ लोग एक शव को श्मशान में ले जाते हुए दिखाई दिये।

अन्त में संसार के बन्धनों को तोड़ कर भिक्षाटन करता हुआ एक भिक्षु दिखाई पड़ा।

उस समय तक सिद्धार्थ के भीतर वैराग्य की जो सुप्त भावना थी, वह अचानक जाग्रत हो गई।

उसी वक्त सिद्धार्थ के अन्दर गौतम बुद्ध बन जाने का बीजारोपण हुआ।

राजकुमार ने चारों दृश्यों के बारे में सारथी से कई प्रश्न पूछे। सारथी को सच्ची बातें बतानी पड़ीं। सिद्धार्थ ने सारथी को आदेश दिया कि वह रथ को राजमहल की ओर लौटा ले।

उस दिन रात को सिद्धार्थ को नींद नहीं आई। राजमहल के बाहर चाँदनी छिटक रही थी।

यशोधरा अपनी शय्या पर सो रही थी। राहुल माँ के वक्ष से लगकर सो रहा था। माँ और पुत्र के चेहरे पर भोलापन दमक रहा था।

सिद्धार्थ को राजमहल छोड़ कर जाने का अपना निश्चय डगमगाता सा लगा। परन्तु उन्होंने अपने मन को कड़ा किया और उनको छोड़ कर कुछ कदम आगे बढ़े। फिर उनके पास लौट आये। इस प्रकार दो बार किया। तीसरी बार सिद्धार्थ ने अपने मन को दृढ़ बना लिया।

यशोधरा के चरणों पर एक कुमुद रखा। उसके चरणों का स्पर्श किया और प्रणाम करके पीछे मुड़ कर अंतःपुर से निकल पड़े।

इसके बाद सिद्धार्थ अंतःपुर से सीधे अश्वशाला में पहुँचे। सारथी चेन्ना को जगा कर घोड़े को तैयार करने का आदेश दिया।

सारथी ने सोचा कि शायद राजकुमार चांदनी रात में घोड़े पर सवार हो घूमना चाहते हैं। थोड़ी देर पहले बूंदा-बांदी हो चुकी थी।

सिद्धार्थ घोड़े पर सवार हो गये। सारथी चेन्ना लगाम थामे घोड़े को हाँकने लगा। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। ज़मीन में नमी थी, इसलिए घोड़े की टापों की ध्वनि सुनाई नहीं दे रही थी। घोड़ा राजमहल को पार करके राजपथ पर पहुँचा। सिद्धार्थ का मन अब स्थिर था। संसार के मायाजाल को वे तोड़ चुके थे। उनको क्या करना है, यह निश्चय पक्का हो चुका था।

वीरदास का भूत

एक गाँव में वीरदास नामक एक किसान था। उसकी पत्नी का नाम जमुना बाई था। उनके किशनदास नाम का एक पुत्र था जो देखने में अपने पिता जैसा था।

खेत में रोपाई चल रही थी। एक दिन सवेरे ही वीरदास अंधेरे में खेत की ओर चल पड़ा। थोड़ी ही देर बाद चार आदमी वीरदास की लाश को उसके घर उठा लाये। अंधेरे में साँप ने उसे डँस लिया था। पड़ोसियों की मदद से किशनदास ने पिता का दाह-संस्कार कर दिया।

वीरदास की पत्नी रो-रोकर बेहोश हो गई। उसने अलसाई नींद में एक सपना देखा। उसका पति भूत बनकर विकृत रूप से हँसते, उल्लू की तरह चीखते, श्मशान के पास के बरगद पर उड़ता जा रहा है।

यह सपना देख वह डर के मारे चिल्ला उठी। अड़ोस-पड़ोस की औरतों ने जो उसको सांत्वना देने आई थीं, पूछा, "बहन, तुम ने कोई डरावना सपना तो नहीं देखा?"

"मेरा पति भूत बन गया है!" इन शब्दों के साथ जमुना बाई ने अपने सपने का सारा वृत्तांत कह सुनाया।

वीरदास की मृत्यु के तीसरे दिन श्मशान के पास बरगद के नीचे बेहोश पड़े एक बनिये को गाँववाले उठा लाये। सेवा-शुश्रूषा करने पर वह होश में आया। तब उसने पिछली रात का समाचार सुनाया।

वह बनिया समीप के गाँव का निवासी था। वह अपनी दूकान के लिए आवश्यक सारी चीज़ें उसी गाँव से सदा ख़रीदकर ले जाता था। उस दिन भी बहुत ही तड़के उठकर माल लाने वह उस गाँव के लिए चल पड़ा। उस रास्ते से वह भली भांति परिचित था। अक्सर वह वक़्त-बे - वक़्त उस गाँव में आता-जाता था। उस दिन श्मशान

के पास पहुँचते ही उसे सियारों तथा उलुओं की भयंकर आवाज़ें सुनाई दीं। बरगद के पत्तों की खड़खड़ की ध्वनि आई। बरगद की जटा पकड़कर कोई सफ़ेद धोती व कुर्ता पहने झूलता-सा दिखाई दिया। पहले से ही बनिया भूतों से डरता था। तिस पर वह भूत गरज उठा, ''अरे बनिये! तुम अपना सारा धन देते जाओ! मेरी पत्नी व लड़के का भी तो पेट भरना है! जानते हो, मैं कौन हूँ? मेरा नाम वीरदास है!''

बनिये की बातों पर गाँववालों का विश्वास जम गया। गाँववालों ने जमुना बाई के घर की तलाशी ली। मगर उन्हें एक कौड़ी भी न मिली।

जमुना बाई अपमानित हो फूट-फूट कर रो पड़ी। इस बात की व्यथा उसे सताने लगी कि साधु प्रकृति का उसका पति न केवल भूत बन बैठा, बल्कि मुसाफ़िरों को भी लूट रहा है!

उस दिन से जमुना बाई के प्रति गाँववालों के व्यवहार में परिवर्तन हो गया। सब ने उसके साथ बोलना-चालना तक बंद कर दिया। वे उसे देखते ही अपना मुँह मोड़ लेते थे। यह बात जुमना बाई के लिए और भी पीड़ादायक थी।

दूसरे दिन रात बीते कोई औरत पड़ोसी गाँव से आ रही थी। भूत ने उसके सारे गहने लूटकर कहा, ''ये गहने मेरी पत्नी धारण करेगी तो और सुंदर दिखाई देगी।''

दूसरे दिन फिर गाँववालों ने जमुना बाई के घर की तलाशी ली, पर कोई चीज़ न पाकर धमकी देने लगे, ''तुम्हारा पति इस गाँव के लिए एक अभिशाप बना हुआ है, उसको यहाँ से भगा दो, वरना तुम्हारी ख़ैर नहीं।''

जमुना बाई की समझ में कुछ न आया। लोग अब भी समझते हैं कि उसका उसके पति के साथ संबंध है। उस भूत को कैसे कहे कि वह इस गाँव को छोड़कर चला जाये !

इसके बाद तीन और लोगों को भूत दिखाई दिया। अंधेरा होते ही गाँव का कोई भी आदमी श्मशान की ओर जाता- आता न था।

गाँववालों ने आपस में सलाह-मशविरा करके जमुना बाई को चेतावनी दी, ''तुम और तुम्हारा बेटा इस गाँव को छोड़कर न जाये तो भूत का यह पिंड छूटेगा नहीं। कल संध्या तक तुम दोनों गाँव छोड़कर न जाओगे तो हम लोग तुम को यहाँ से भगा देंगे।''

घर-द्वार छोड़कर जाये तो कहाँ जाये! इसलिए जमुना बाई ने अपने पति से बिनती करने की हिम्मत की और श्मशान की ओर चल पड़ी। उसे सियारों की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी। जब वह बरगद के निकट पहुँची तब पेड़ की डालों में से ये शब्द सुनाई पड़े, ''अरी, ठहर जाओ! मेरी पत्नी और पुत्र का पेट कैसे भरे! तुम्हारे पास जो कुछ है, उसे वहाँ पर रख दो। जानती हो, मैं कौन हूँ। मैं वीरदास हूँ।''

जमुना बाई अवाक् रह गई। वह आवाज़ वीरदास की न थी। वह लौटकर घर चली आई। उसने सारा समाचार अपने पुत्र किशनदास को सुनाया और कहा, ''बेटा! कोई कमबख़्त तुम्हारे पिता को बदनाम कर रहा है। उसको पकड़वा देना चाहिये।'' इस पर किशनदास ने एक उपाय सोचा और अपनी माँ को बताया। जमुनाबाई ने अपनी सहमति दे दी।

दूसरे दिन जमुना बाई ने गाँव वालों से बताया, ''हमलोग कल इस गाँव को छोड़कर चले जाएँगे।''

उस रात को माँ-बेटे ने खाना खाया। किशनदास ने अपने बालों में सफ़ेदी पोत ली, वह देखने में वीरदास जैसा था। दोनों श्मशान में पहुँचे। किशन सफ़ेद धोती व सफ़ेद कुर्ता पहने बरगद के खोखले में छिप गया। जमुना बाई समीप की एक झाड़ी में छिप गई।

थोड़ी देर बाद गाँव की ओर से एक आदमी सफ़ेद धोती व कुर्ता पहने वहाँ पहुँचा। वह बरगद पर चढ़कर डालों के बीच बैठ गया। तब वह उल्लू की तरह बोला और लोमड़ियों की भाँति चिल्लाया।

जमुना बाई इसी उद्विग्नता के साथ खोखले की ओर ताक रही थी कि किशन कब बाहर निकलेगा। इतने में वह बाहर आया। पेड़ पर बैठे हुए व्यक्ति से बोला, "अरे बदमाश! तुम मुझे बदनाम करते हो? देखो, अभी मैं क्या करता हूँ? जानते हो, मैं कौन हूँ? मैं वीरदास हूँ।"

ये बातें सुन पेड़ पर बैठा हुआ व्यक्ति काँपकर नीचे आ गिरा। वह छटपटाते हुए बोला, "वीरदास! मुझ से ग़लती हो गई। मुझको माफ़ करो। मेरी हानि न करो! तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ।"

"मैं तुम्हारी कोई हानि नहीं करूँगा! मगर यह बताओ, आज तक तुमने लोगों को डराकर जो धन लूटा, उसे कहाँ छिपा रखा है?" वीरदास की ये बातें सुन वह व्यक्ति थर-थर काँपते पेड़ की जड़ के निकट खोदने लगा।

अपनी चाल के सफल होते देख जमुना बाई फूली न समाई और, गाँव में जाकर बोली, "मेरे पति को बदनाम करनेवाला धूर्त पकड़ा गया है। आओ, तुम सब ख़ुद अपनी आँखों से देख लो।" वह गाँव के कई लोगों को श्मशान तक बुला ले आई। नकली भूतवाला आदमी मशाल लेकर आनेवाले गाँव के मनुष्यों को देख घबरा गया। उसने तब तक लूटा हुआ सारा माल बाहर निकाल दिया था। "अबे चोर के बच्चे! यह तुमने क्या किया?" इन शब्दों के साथ गाँव वालों ने उसको मार-पीट कर अधमरा कर दिया।

उस वक़्त पेड़ के खोखले में से किशनदास ने झाँककर देखा और कहा, "यह सब क्या हो रहा है! मैं थोड़ा ऊँघ गया था!"

जमुना बाई अचरज में आ गई। यह सारा नाटक किशनदास ने ही रचा था। इसके बाद जमुना बाई ने सारा समाचार लोगों को सुनाया। तब जाकर लोगों की समझ में आया कि वीरदास के भूत ने ही नकली भूत को पकड़वा दिया है। जो माल खो गया था, सब को वापस मिल गया।

गाँव वालों ने जमुना बाई से माफ़ी माँगकर गाँव न छोड़ने की मिन्नत की। भूत का नाटक रचने वाला व्यक्ति सवेरा होने के पहले ही गाँव छोड़कर भाग गया। इसके बाद किसी ने भी वीरदास के भूत को नहीं देखा।

27
आर्य
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
जब वीरसिंह और जयर सेन की शाही ख़ज़ाने को लूटने की कोशिश विद्रोहियों द्वारा विफल कर दी गई तब उन्होंने विद्रोहियों को पकड़ने के लिए पड़ोसी राज्य अमृतपुर पर भोर होने से पहले अचानक हमला करने का निश्चय किया। विद्रोही नेता वसन्त ने आर्य को बुलाने का सन्देश भेजा। आर्य ने जयानन्द से विदा ली। मुनि ने उसे आशीर्वाद दिया।
चित्र :

वसन्त आर्य को वहाँ ले जाता है जहाँ विद्रोही दल के स्वयं सेवक एकत्रित हैं।
भाई, वहाँ पर वृद्ध सज्जन कौन हैं।
आप उनसे ज़रूर मिलिये, आर्य। वे मानवेन्द्र हैं, आप के पिता के प्रधान मंत्री।

वे शान्तिपुर को बचाने के लिए मार्ग निर्देशन देते रहे हैं।
चलिये, उनसे मिलते हैं।

वसन्त जब चरण-स्पर्श करता है...
कृपया मेरा अभिवादन स्वीकार करें।

यह हमलोगों की पहली भेंट है, महानुभाव!
जब हमलोग तुम्हारा प्रथम जन्मदिन मना रहे थे, तब मैंने तुम्हें देखा था। समय कितनी जल्दी बीत जाता है!

आर्य, मैं प्रसन्न हूँ कि तुम इन लोगों का नेतृत्व करोगे।
हमें राज्य हड़पनेवाले को भगाना होगा।
जाओ! विजयी भव!
पहाड़ की घाटी बिलकुल सामने है। अपनी-अपनी जगह पर तैनात हो जायें।
सैनिक घाटी के करीब आ रहे हैं!
तुम जाओ, हमलोग मुहाने की रक्षा करेंगे।
स्वयं सेवक बसन्त के निर्देश की प्रतीक्षा करते हैं।
वीरसिंह और सेनापति को आगे बढ़ जाने देना। सैनिकों को घेर लेना और उन पर बाण छोड़ देना।
मैं वीरसिंह और जबरसेन को आते हुए देख रहा हूँ।
वीरसिंह और जबर सेन नहीं जानते कि वे सैनिकों से अलग हो गये हैं।
मुझे तीर लगा! मुझे बचाओ!
पीछे सैनिक बाणों के शिकार हो जाते हैं और वे गिर पड़ते हैं।
एक तीर! यह कहाँ से आया?

अधिक संख्या में सैनिक गिरते हैं। उनकी चीखें हवा को चीरने लगती हैं।
आह! हा!
एक कमान उन्हें रोकता है।
महोदय, हम पर हमला हो गया।
पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के बाद समतल पर आ जायेंगे जहाँ से हमलावरों से निबट सकते हैं।
हमलावर, क्या तुमने कहा?
वे कौन हैं जब्बर? उन्हें कैसे पता चला कि हमलोग इस समय यहाँ हैं?
जरूर वे स्थानीय आदिवासी होंगे। हमारे सैनिक उन्हें संभाल लेंगे।
एक दूसरा कमान आता है।
महोदय, शत्रु के सैनिकों ने हमें घेर लिया है। सभी दिशाओं से बाणों की वर्षा हो रही है!
एक तीर जब्बर सेन के पास से सनसनाता निकल जाता है। वह झुक जाता है।
कौन? कौन तीर चला रहा है?

वीरसिंह जबर सेन के लिए इन्तज़ार नहीं करता।
शत्रु सैनिक? कौन-सा शत्रु?
जबर सेन घोड़े को एड़ लगाता है।
तुम वापस जाओ और सैनिकों को हमारे पीछे-पीछे ले आओ।
दूसरे ही क्षण जबर सेन को एक तीर लगता है। वह गिर पड़ता है।
आह ! हा !
महोदय...महोदय!
ये मर गये, महाराज!
वीरसिंह कमान की पुकार सुनता है। वह घोड़े से नीचे उतरता है।
तुम वापस जाओ, सभी सैनिकों को एकत्रित करो और मेरे पीछे आओ।
महाराज...
हमें भोर से पहले अमृतपुर पहुँचना है।
वीरसिंह जैसे ही घोड़े पर फिर सवार होने लगता है, बसन्त और आर्य वहाँ प्रकट होते हैं।
रुक जाओ!
तो तुम अमृतपुर पर हमला करना चाहते हो? लेकिन किसलिए?
क्रमशः

हमारे देश के आश्चर्यः

चित्तौड़ का विजय - स्तम्भ

भारत देश के इतिहास में प्राचीन नगर चित्तौड़ गढ़ का मुख्य महत्व है। सन् ७२८ ई.में प्रसिद्ध राजपूत वीर बप्पारावल ने इस नगर की स्थापना की थी। राजपूतों की वीरता, पराक्रम, विकास व संस्कृति के लिए यह चिरकाल से प्रसिद्ध था। परन्तु यह बाद में मुगलों द्वारा नष्ट कर दिया गया।

राजा भीमसिंह, जिसकी पत्नी पद्मिनी विश्व विख्यात सुन्दरी थी, यहीं का था।

मीराबाई, जिसके पद-चिह्न भारत भर में व्याप्त हैं और जो अपनी कृष्णभक्ति के लिए अमर है, उसका बनवाया हुआ कृष्णालय भी यहीं है। उसके पति, कुम्भ राणा का बनवाया हुआ एक और मन्दिर भी यहाँ है।

यहाँ के भवनों में उल्लेखनीय विजय- स्तम्भ है। मालवा के सुल्तान मोहम्मद खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया, पर हार कर वापस चला गया। यह स्तम्भ उसी विजय का स्मारक है। सन् १४४० ई. में कुम्भ राणा ने इसको बनवाया था। इसकी ऊँचाई १२२ फुट है।

तुम्हारे लिए विज्ञान

ब्रेन वेव्स क्या हैं?

ब्रेनी अथवा कुशाग्र बुद्धि का, ब्रेन वेव्स यानी दिमाग की तरंगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, हालांकि किसी गहरी सूझ के लिए अक्सर इस शब्द का प्रयोग करते हैं। वास्तव में, ब्रेन वेव मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न एक विद्युत आवेग है। मस्तिष्क इन आवेगों को हर समय उत्सर्जित करता रहता है, और यह कोई आवश्यक नहीं है कि यह किसी गहरी सूझ के आने पर ही हो।

मस्तिष्क की तरंगों को ऐन्सिफैलोग्राफ अथवा इ.इ.जी.की मदद से मापा जा सकता है। उसकी बारम्बारता के अनुसार मस्तिष्क की तरंगें दो से चार आकृतियों का मिश्रण बना सकती हैं। जब आप विश्राम और जाग्रत अवस्था में होते हैं, तब आप का मस्तिष्क अल्फा तरंगें उत्पन्न करता है। बेटा तरंगें अधिक व्यस्त आकृति उत्पन्न करती हैं। ये तभी उत्पन्न होती हैं जब आप सक्रिय होते हैं। बेटा तरंगें केवल बच्चों में पायी जाती हैं। जब ये प्रौढ़ों में पाई जाती हैं, तब ये अस्वाभाविकता का परिचायक हो सकती हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

पपीते से दूध

कच्चे केले के समान कच्चे पपीते को भी सब्जी माना जाता है; पकने पर यह फल बन जाता है।

इसका पौधा सभी उष्णकटिबन्धीय देशों में उगाया जाता है। यह भारत में सब जगह पाया जाता है।

इसका औषधिक महत्व इसके अन्तर्निहित पाचक तत्व पपेन के कारण है। पपेन श्वेत वनस्पति-दूध होता है जो पौधे के काटने पर इससे बाहर बहने लगता है। वनस्पति-दूध का स्तर फल में केन्द्रित रहता है।

पपेन के अतिरिक्त पपीता ए विटामिन का अच्छा स्रोत है। इसलिए वर्द्धनशील बच्चों के लिए यह एक उत्कृष्ट आहार है। पक जाने पर इसके फल में विटामिन सी की मात्रा अत्यधिक हो जाती है।

पका पपीता हर रोज़ खाने से अनेक लाभ होते हैं। यह कब्ज और पुराने दस्त को ठीक करता है। इनके खाने से भूख बढ़ती है।

यदि कोई इसे हर रोज़ नाश्ते से आधा घण्टा पहले खाये तो यह रक्तचाप को नियन्त्रित रखेगा।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

ज़ोरदार पनाह !

तुम्हारे विचार से भयानक रेगिस्तानी गर्मी से बचने का सर्वश्रेष्ठ साधन क्या हो सकता है? निस्सन्देह वातानुकूलित कक्ष के शीतल एकान्तवास में पलायन नहीं! सर्वथा निश्चित रूप से नहीं यदि तुम रेगिस्तानी भरत पक्षी (लार्क) हो।

इस पक्षी ने, जैसे भी हो, अपनी आश्रय-समस्या का बहुत ही ज़ोरदार समाधान पा लिया है। दिन में यह मिस्री छिपकली के बिल में आश्रय लेता है। भरत पक्षी अच्छी तरह जानता है कि इसकी सुरक्षा सुनिश्चित है, क्योंकि इसका मेजबान शाकाहारी है।

दिलचस्प बात यह है कि भरत पक्षी अपनी जाति के किसी अन्य पक्षी को बिल में साझेदारी करने नहीं देता यद्यपि यह तीन के लिए पर्याप्त होता है।

अपने भारत को जानो

दक्षिणी राज्यों पर केन्द्रित

१. कुचिपुडि की नृत्य शैली का उद्‌गम दक्षिण का कोई एक राज्य है। कौन-सा?

२. दक्कन पठार में सबसे लम्बी नदी कौन-सी है?

३. कथकली, अभिनय कला की एक प्राचीन शैली की एक शाखा है। किसकी?

४. किस दक्षिण भारतीय लेखक ने सन् २००२ के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार जीता?

५. दक्षिण भारत के एक स्टेडियम ने अपने को धूम्रपान से मुक्त क्षेत्र घोषित किया है। यह कहाँ स्थित है?

६. एक दक्षिण भारतीय जो एक अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्था का प्रमुख था, हाल में दिवंगत हो गया। कौन?

(उत्तर पृष्ठ ७० पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंकमें किया जाएगा।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

एम. सम्पत कुमारी
ए-३, स्वास्थ्य विहार,
विकास मार्ग,
नई दिल्ली-११००९२

"पानी से ही सबका जीवन,
पानी से पुष्पित नन्दन वन।"

"अपने भारत को जानो" प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. आन्ध्र प्रदेश।
२. गोदावरी।
३. रमानाट्टम।
४. तमिल लेखक जयाकान्तन।
५. जवाहर लाल नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम, कोची।
६. स्वामी रंगानाथानन्दा, रामकृष्ण मिशन।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

तेल की कहानी

एक तेल परिष्करणशाला के एक अभियन्ता मि.दास बीना की कक्षा में पेट्रोलियम, इसके लाभ और इतिहास पर एक वार्ता दे रहे हैं।

''आधुनिक जीवन पेट्रोलियम तथा इसके उत्पादों पर अत्यधिक निर्भर करता है'', वे कक्षा को बताते हैं। ''मैं कुछ उदाहरण देता हूँ। क्या तुम सब जानते थे कि टूथब्रश, जो हर रोज इस्तेमाल करते हो, प्लास्टिक पैकेट जिनमें तुम्हारे पास सुबह दूध आता है और तुम्हारी कलमें, ये सब कच्चे तेल से बने हैं?''

कक्षा में होहल्ला हो गया, क्योंकि अनेक छात्र एक साथ बोलने की कोशिश करने लगे।

''लेकिन यह कैसे अंकल?''

''आप का मतलब क्या है? टूथब्रश या कलम तेल से कैसे बनाई जा सकती है?''

मि.दास ने थोड़ी उत्तेजना का, जो उन्होंने उत्पन्न कर दी थी, आनन्द लेकर मुस्कुराते हुए कहा, ''ये सब चीज़ें प्लास्टिक से बनती हैं, क्या नहीं बनतीं?'' उन्होंने पूछा। ''तो सुनो, पेट्रोलियम प्लास्टिक के निर्माण में एक महत्वपूर्ण उपादान है।''

''तेल का उपयोग कब से हो रहा है, अंकल?'' बीना प्रश्न करती है।

''ओह, यह तो चिर काल से होता रहा है,'' मि. दास कहते हैं। ''मिस्रवासी अलकतरे से शवों पर लेप करते थे। ५,००० साल से भी पहले सुमेरवासी, बेबीलोनवासी तथा असिरियावासी यूफरात के निकट बड़े रिसावों से निकले कच्चे तेल से रास्तों का फर्श बनाते और अपने मकानों को जोड़ते थे। ईसा से २००० वर्ष पहले चीनी लोग कच्चे तेल को साफ कर इसे लैम्प में जलाते और घरों को गर्म रखने में इस्तेमाल करते थे।''

''लेकिन मैं तो सोचती थी कि तेल एक आधुनिक खोज है!'' सुनीता बिस्मियपूर्बक कहती है। ''मुझे नहीं मालूम था कि इतने लम्बे अर्से से इसका प्रयोग हो रहा है।''

''यह सचमुच था, मेरे बच्चे'', मि.दास कहते हैं। ''और, आगे तो तुम्हें और अधिक आश्चर्य मिलनेवाले हैं।''

महालैक्टो खाओ।
मम्मी पापा को
सिंगापुर ले जाओ।

CHANDAMAMA (HINDI) SEPTEMBER 2005
REGD NO. TN/PMG(CCR)-984/06-06
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO. 1062/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO. 361/06-08 PO/F/10M - WPP NO. 88/06-08

* Offer till 15th September, 2005. Conditions apply.

महालैक्टो के रैपर के अंदर छपे MAHALACTO शब्द के अक्षरों का पूरा सैट इक्ट्ठा कीजिए। और जीतिए आकर्षक इनाम!

MAHALACTO शब्द में 'A' अक्षर कितनी बार आता है [2] [4] [3] (सही उत्तर पर निशान लगाएँ)

नाम..

D.O.B.......................डोर नं: ....

स्ट्रीट..

शहर/गाँव ....

जिला.............................राज्य ....

पिन कोड.........................फ़ोन ....

यहाँ भेजिए:
पोस्ट बॉक्स नं: 1056, किलपाक, चेन्नई – 600 010.

For more details log on to www.nutrinesweets.com

Bumper Prize - 5 Nos.
3 days/2 nights trip - stay, sight seeing for winners with their parents - to Singapore

First Prize - 300 Nos.
Nokia 1100 Mobile Phone

Second Prize - 5,000 Nos.
Trendy Wrist-watch

Third Prize - 10,000 Nos.
5-in-1 Games Set

Terms and conditions: The offer is valid for all Indian residents. The offer is not open to employees of Nutrine Confectionery Company Pvt. Ltd. and Rediffusion DYR Pvt. Ltd. The stipulated number of original Mahalacto wrappers should be sent by ordinary post with name, age, date of birth & residential address along with PIN code & telephone number of the applicant. Finding the number of A's in the word 'Mahalacto' and collecting the wrapper with the complete letters to form 'MAHALACTO' are mandatory to participate in this offer. Offer valid from July 15 to September 15, 2005. The winners will be intimated by post, every 10 days from the start of the offer period. For the bumper prize winners and their parents, owning an Indian passport is mandatory. The bumper prizes cannot be transferred, and only the winners' parents are entitled to travel as escorts. The travel dates, airlines, pick up & drop, stay & sightseeing at Singapore shall be organised by Nutrine and the stipulated date will be applicable to all the 5 winners & their parents. The decision of mode of transport & hotel stay for 3 days & 2 nights will solely be at the discretion of Nutrine Confectionery. Bumper prize winners and their parents, travelling to Singapore, would be travelling at their own risk and Nutrine Confectionery would not be responsible for safety of the passengers or their luggage. The prizes are on all India basis. Nutrine Confectionery will not be responsible for any contestant's mail if it's lost in transit. Guarantee on gift articles lies entirely with the manufacturer of the gift articles and not with Nutrine Confectionery Private Limited. All entries and contest material will become the property of Nutrine Confectionery Company Private Limited. Cash in lieu of prizes will not be given. Winners should fill in a claim form while collecting the prizes at the respective dealer /distributor point. All decisions regarding the offer are solely at the discretion of Nutrine Confectionery Company Private Limited. No communication with regard to the contest will be entertained. All disputes shall be subject to Chittoor, A.P jurisdiction only. Nutrine Mahalacto is also available without this offer.